


ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥ अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

गुरमति ज्ञान

(धर्म प्रचार कमेटी का मासिक पत्र)

कार्तिक-मार्गशीष, संवत नानकशाही ५३९

नवंबर **2007** वर्ष १ अंक ३

संपादक
सिमरजीत सिंघ
एम. ए., एम. एस. सी.

सहायक संपादक
सुरिंदर सिंघ निमाणा
एम. ए. (हिंदी, पंजाबी), बीएड.

चंदा

प्रति कापी	३ रुपये
सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव
धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६



फोन : 0183-2553956-57-58-59

एक्सटेंशन नंबर { वितरण विभाग **303**, संपादकीय विभाग **304** }

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com

website : www.sgpc.net

विषय सूची

गुरबाणी विचार

जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥
सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै ॥१॥रहाउ॥
नह निंदिआ नह उसतति जा कै लोभु मोहु अभिमाना ॥
हरख सोग ते रहै निआरउ नाहि मानु अपमाना ॥१॥
आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा ॥
कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रहमु निवासा ॥२॥
गुर किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इह जुगति पछानी ॥
नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ जिउ पानी संगि पानी ॥३॥ *(पन्ना ६३३)*

नवम गुरू श्री गुरू तेग बहादर जी महाराज इस पावन शब्द में गुरमुख-जन के प्रमुख चिंन्ह दर्शाते हुए मनुष्य मात्र को गुरमुखता के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करने का परोपकार करते हैं।

गुरू जी कथन करते हैं कि हे भाई! जो मनुष्य दुख की स्थिति में दुख को नहीं मनाता भाव दुखित नहीं होता, जिस मनुष्य के दिल में सुख-सुविधाओं के साथ लगाव नहीं और न उन सुख-सुविधाओं के अभाव का भय होता है, जो मनुष्य सोने को मिट्‌टी के समान मानता है, गुरमुख वही है।

गुरू जी फरमान करते हैं कि जो दूसरों की निंदा नहीं करता और न ही स्तुति करता है, जिसके मन में न लालच न मोह और न ही अहंकार है, जो खुशी और गमी से ऊपर अथवा निर्लेप-अलेप रहता है, जिसको न स्वयं के सम्मान की इच्छा होती है और न ही अपमान हो जाने की शंका या भय ही होता है, गुरमुख वही है।

गुरू जी आगे कथन करते हैं कि हे भाई! जो मनुष्य आशाओं, इच्छाओं एवं मनो-कामनाओं को पूर्णत: त्याग देता है और दुनिया के साथ हद से बढ़कर लिपायमान न होकर स्वयं को स्थिर मनोस्थिति में रखता है, जो काम और क्रोध जैसे विकारी भावों से अछोह रहता है, उसी के हृदय में प्रभु निवास करते हैं।

गुरू जी फरमाते हैं कि जिस मनुष्य पर प्रभु ने कृपा की उसने ही यह जीवन-ढंग पहचाना अथवा धारण किया है। नवम पातशाह, श्री गुरू नानक देव जी महाराज के पावन नाम को यह पावन शब्द समर्पित करते हुए कथन करते हैं कि उपरोक्त चिंन्हों-विशेषताओं का धारक मनुष्य परमात्मा के साथ इस प्रकार अभेद हो जाता है जैसे जल के साथ जल का विलय होता है। ■

संपादकीय

जन-साधारण को पाखंडियों के महाजाल से स्वयं बचना होगा!

मनुष्य को प्रभु परमात्मा से साक्षात्कार करने, उससे मिलाप करने की इच्छा आदि काल से रही है। वास्तविक संत अथवा सतिगुरु मानव की इस इच्छा की पूर्ति का माध्यम बनते हैं जबकि नकली संत अथवा 'अपने मुंह से मियां मिट्ठू बनने' का अमलो-व्यवहार करने वाले तथाकथित गुरू लोगों को प्रभु परमात्मा के साथ साक्षात्कार कराने को व्यापार बनाकर लोगों का जमकर शोषण करते हैं। इसी तरह परमात्मा का आभास कराने के प्रलोभन देकर वे ऐसे ढोंग एवं छल-कपट करते हैं कि जल्द ही लोगों की नजरों में खुद को 'परमात्मा' या 'गुरू' के रूप में प्रस्तुत करने लगते हैं। ऐसे नकली संत और तथाकथित गुरू हमारे समाज में सदियों से अपना अस्तित्व कायम रखते चले आ रहे हैं। लोग चिरकाल से उनके पाखंड-जाल में फंसकर अपना बहुपक्षीय तथा बेकिरक शोषण करवाते चले आ रहे हैं। लोगों को ऐसे ढोंगियों से बचाना एक पुन्य कर्म है। यह पुन्य कर्म निभाने में गुरमति विचारधारा तथा गुरमति जीवन-युक्ति से परिचित और इस विचारधारा व जीवन-युक्ति के अनुसारी गुरमुख-जन अपना बनता योगदान डालकर मानवता की महान सेवा कमाकर गुरू की खुशियों के पात्र बन सकते हैं।

इस प्रकार की सेवा सर्वप्रथम सिख धर्म के संस्थापक गुरू नानक साहिब ने निभाकर अपना रौशन मीनार की भांति ऊंचा व उज्जवल उदाहरण रखा था। गुरू जी के समय में पैगंबर और औलिये कहलवाने वाले, अपने आप को आध्यात्मिक पीरों के रूप में उभारने के लिए यत्नशील लोग जनसाधारण को अपने तप-तेज के बल से डराने और उन पर अपनी धाक जमाने के लिए प्रयत्नशील थे। उनके क्रोध तथा क्रोपी से लोग खौफ़ज़दा रहते थे। मुलतान के हमजा गौंस नामक पीर का उदाहरण गुरू नानक देव जी महाराज की जन्मसाखियों में इस प्रसंग में देखा जा सकता है। गुरू-बाबे ने उस पीर को उसके वास्तविक कर्त्तव्य से अवगत कराकर सीधे-सादे लोगों को उसके भय से मुक्त कराने का परोपकार किया।

ऐसे ही गुरू जी के युग में सिद्धों तथा योगियों का बहुत जोर था। वे स्वयं को प्रभु परमात्मा के साथ मिले हुए प्रकट करके आम लोगों में अपने बढ़प्पन का प्रकटावा करते थे। गुरू जी ने सुमेर पर्वत पर जाकर समय के सिद्ध कहलवाने वालों को चेताया कि यदि उनके पास अध्यात्म वस्तु है तो वे समाज में रहकर उसको वितरित करने से भगौड़ा क्यों हैं? भाई गुरदास जी के शब्दों में- *सिध छपि बैठे परबती कउणु जगति कउ पारि उतारा?*

गुरू बाबे ने उन्हें यह चेताया कि स्वयं ज्ञान से हीन होना और केवल शरीर पर बिभूति मल लेना योगी होना नहीं है—*जोगी गिआन विहूणिआ निसदिनि अंगि लगाए छारा।*

भंगरनाथ योगी ने गुरू बाबे को कहा, 'आप ने दूध में क्यों कांजी डाली?' 'उदासी' का

बाणा उतार दोबारा 'संसारी रीति' क्यों चलाई? (चूंकि गुरु बाबे ने अपने शिष्यों के लिए विलक्षण निज उदाहरण रखने हेतु चार लम्बी सत्य-प्रचार-यात्राओं के बाद करतारपुर बसाकर वहां जीवन के अंतिम चरण के १८ वर्ष कृषि जैसी कठिन कार की) तो गुरू महाराज ने भंगरनाथ से कहा कि *होइ अतीतु ग्रिहसति तजि फिर उनहु के घरि मंगणि जाई। बिनु दिते कछु हथि न आई ॥* और सिद्धों-योगियों को गुरू बाबे ने निरुत्तर किया—*सतिगुर अगम अगाधि पुरखु केहड़ा झले गुरू की झाला। . . . सबदि जिती सिधि मंडली कीतोसु अपणा पंथु निराला।*

आज के अधिकतर तथाकथित संत लोगों को अध्यात्म-ज्ञान देने के दावे करते हैं परंतु उनका अपना जीवन बेहद मैला है। वे संतों के पहरावे की ओट में भोले-भाले जन-साधारण के साथ करूर पाप तक कमा रहे हैं। लोगों द्वारा भेंट की गई माया से उनके तथाकथित डेरे करोड़पतियों की कोठियों जैसे बन चुके हैं। उनके पास आधुनिक युग की हरेक सुख-सुविधा है। किरत से टूट कर प्रभु-नाम जपने या जपाने के सभी दावे झूठे हैं। परंतु सर्व-साधारण लोग इस असलियत से प्राय: अनजान होने के कारण अपनी पारिवारिक, मानसिक, शारीरिक आदि सभी समस्याओं तथा परेशानियों का एक मात्र समाधान इन तथाकथित संतों की शरण में आकर ढूंढ रहे हैं।

ऐसे ही तथाकथित संतों में एक गुरमीत राम रहीम कहलवाने वाले तथाकथित संत के अत्यंत ओछे किरदार से पर्दा २००२ में तब उठा जब उसके तथाकथित 'सच्चा सौदा' डेरा में रहने वाली किसी बेनाम साधवी ने अपनी इज्जत-असमत लूटे जाने की करुण-कथा देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी को लिखे पत्र में लिखकर भेजी। और भी दुखदायक स्थिति यह है कि इस डेरे में लोग अपनी युवा बेटियों को भेजने से अब भी रुके नहीं। गत कुछ एक महीनों से लोगों में इस तथाकथित संत के पाखंड के बारे में सुचेतना आई है। इसका मुख्य कारण, इसके द्वारा दशमेश पिता श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी के सन् १६९९ के आनंदपुर में बरताये खालसा की साजना के ऐतिहासिक कारनामे की नकल करने की हिमालय पहाड़ जितनी बड़ी भूल करने की मनबधी करना है। सिख समुदाय द्वारा इसको रोका जाना स्वाभाविक था। अब वक्त है कि जनसाधारण इस पाखंडी के कुरूप किरदार से अवगत होकर इसका पूर्ण बहिष्कार करे और अपनी बहुपक्षीय लूट-खसूट से बचकर तात्विक अध्यात्म-ज्ञान की महान वस्तु की प्राप्ति हेतु सर्वसांझी गुरबाणी एवं सर्वसांझे गुरू-घर की निर्मल ओट में आये। वास्तव में खंडे-बाटे का अमृत-पान करना ही समकालीन तथाकथित संतों के पाखंडवाद से बचने का एक मात्र कारगर साधन है। अत: बहनो एवं बंधुजनो! कृप्या विवेक से काम लेते हुए सत्यवादी और नकली संतों का निर्णय अवश्य करें। जिनके पास अध्यात्म ज्ञान है ही नहीं उनसे वह ज्ञान लेने की आशा करनी व्यर्थ है, क्योंकि: *फरीदा सोई सरवरु ढूढि लहु जिथहु लभी वथु ॥ छपड़ि ढूढै किआ होवै चिकड़ि डुबै हथु ॥*

■

गुरू नानक साहिब की बाणी का वैशिष्टय

*-डॉ. अन्जूमन**

गुरबाणी परम्परा में आदि गुरू श्री गुरू नानक देव जी ने बहुत अधिक मात्रा में बाणी की रचना की है। उनकी बाणी में मौलिक चिंतन, प्रगतिशील समाज-निर्माता, अद्वितीय धर्म-संस्थापक और श्रेष्ठ मानवतावादी युग पुरुष की सभी विशेषताएं मिलती हैं। उनकी बाणी से यह स्पष्ट होता है कि वे एक महान आत्म-ज्ञानी तो थे ही इसके साथ-साथ वे उच्च कोटि के कवि भी थे। यह ज्ञात हो कि गुरू जी ने स्वयं को अपनी पावन बाणी में कई जगह शायर के नाम से वर्णन किया है। उनकी कविगत विशेषताओं की ओर उल्लेख करते हुए डॉ. त्रिलोकी नारायण दीक्षित लिखते हैं- 'गुरू नानक देव ने पंजाबी और हिन्दी भाषाओं के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति काव्य के रूप में की है। जहां एक ओर उन्हें इंद्रिय संयम और आत्म-ज्ञान की शक्ति प्राप्त थी वहां दूसरी ओर हिन्दी और पंजाबी में साधारण तथा दुरूह से दुरूह भावों की अभिव्यक्ति की शक्ति भी प्राप्त थी। श्री गुरू नानक देव जी प्रतिभाशाली जन्मजात कवि थे।'

विद्वानों का ऐसा मत है कि गुरू नानक साहिब अपनी बाणियों/कृतियों का संग्रह स्वयं करते जाते थे जिससे न केवल उनका यथा- समय सदुपयोग होता रहे, अपितु वे पीछे विकृत भी न बनने पावें तथा इससे जिस आदर्श व्यवस्था की उन्होंने कल्पना की, उसकी उपलब्धि में सहायता मिले। गुरू नानक साहिब द्वारा रचित पावन बाणी की विशेषता को इंगित करते हुए डॉ. नगेन्द्र लिखते हैं, "कवि-रूप में उन्होंने 'गुरू नानक देव : एक सशक्त काव्य-परम्परा' का प्रवर्तन किया, जिसने शताब्दियों तक इसी का संवर्धन किया।" इस प्रकार श्री गुरू नानक देव जी की बाणी की विशेषताओं के कारण इसे 'गुरबाणी' अथवा 'गुरू-काव्य' की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। श्री गुरू नानक देव जी की बाणी की विशेषताओं का विवेचन आगे प्रस्तुत किया जाता है।

वर्ण-विषय की विशेषता: श्री गुरू नानक देव जी की पावन बाणी में आध्यात्मिक विषयों के साथ-साथ नैतिक, सामाजिक और राजनीतिक विषयों पर भी बहुत लिखा गया है। गुरू जी की बाणी में नैतिकता और सामाजिकता का स्तर स्पष्ट और बहुत ऊंचा है। उनकी बाणी में राजनीतिक विषयों के बारे में डॉ. जयराम मिश्र लिखते हैं कि 'कदाचित संत कवियों में गुरू नानक देव जी ही ऐसे कवि थे जिनकी देश की दुर्दशा के ऊपर पैनी दृष्टि थी। उन्होंने देश की राजनीतिक दुर्दशा का मार्मिक चित्रण किया है।'

श्री गुरू नानक देव जी ने अपने दार्शनिक सिद्धांतों को जपु जी साहिब के आरंभ में मूल-मंत्र के रूप में प्रस्तुत किया है। वह मूल-मंत्र इस प्रकार है-'१ਓ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।' अर्थात् ब्रह्म एक है, उसका नाम पूर्ण सत्य है, वह सर्वस्व का रचयिता है, वह निर्भय है, निरवैर है, उसका अस्तित्व कालातीत है, वह अजन्मा है, स्वयंभू

*प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग, बेरिंग यूनियन क्रिश्चियन कॉलेज, बटाला (गुरदासपुर)। मो. ९२१७२-७४४४३

है और उसकी उपलब्धि गुरू-कृपा से ही सम्भव है। गुरू नानक साहिब ने मूल-मंत्र द्वारा आध्यात्मिक चिंतन को व्यवस्थित एवं व्यवहारिक रूप प्रदान किया। उन्होंने 'ੳ' से पूर्व '१' की संख्या लगाकर हमेशा के लिए ब्रह्म के अनेक संज्ञक नामों को समाप्त कर दिया। यह उनकी भारतीय अध्यात्म-चिन्तन को एक नई एवं मौलिक देन है। इसी प्रकार परम सत्ता को 'करता पुरखु' सम्बोधित कर, हिन्दू धर्म के सांख्य-मत की जड़ और स्त्री-वाचक प्रकृति में निर्माण-शक्ति को सदा-सर्वदा के लिए समाप्त कर दिया। इसी प्रकार परम सत्ता में निर्भय, निरवैर आदि गुणों का प्रतिपादन, विश्व के आध्यात्मिक चिंतन में गुरू साहिब की एक अन्य महत्वपूर्ण मौलिक देन है।

गुरू नानक साहिब ने सृष्टि की रचना को परमात्मा की तरह ही सत्य माना है। उन्होंने वेदांत चिंतन की माया संबंधी धारणा का खण्डन करते हुए माया के स्वतंत्र अस्तित्व को अस्वीकार किया है। उन्होंने स्पष्ट घोषित किया है कि माया की रचना ब्रह्म द्वारा होती है। ब्रह्म ने ही त्रैगुणों और उनसे सम्बद्ध माया का निर्माण किया। उसी ने माया और उसके तीनों पुत्रों की रचना की है और वह उन्हें अपनी इच्छा अनुसार ही चलाता है, यथा-

एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु ॥
इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु ॥
जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ॥
(पन्ना ७)

गुरू नानक साहिब ने अपनी भक्ति-साधना के लिए 'नाम-मार्ग' को अपनाया। 'नाम-मार्ग' की भक्ति के अन्तर्गत उद्यम और पुरुषार्थ को विशेष महत्व दिया। उन्होंने सतसंगति, कीर्तन तथा अरदास पर विशेष बल दिया।

गुरू नानक साहिब की बाणी में सामाजिक समस्याओं को भी निरूपायित किया गया है। उन्होंने अपने जिस सामाजिक दर्शन की बात कही है उसको विशेषित करते हुए डॉ. पदम गुरचरन सिंघ उचित ही लिखते हैं, 'भारतीय समाज को खुशहाल बनाने के लिए श्री गुरू नानक देव जी ने हिन्दुओं, मुसलमानों, बौद्धों, नाथों आदि को उनके धर्म-ग्रंथानुसार उपदेश देकर उन्हें एक-दूसरे के प्रति उदार एवं सहिष्णु बनने के लिए अनुप्रेरित किया। उन्होंने *'जाणहु जोति न पूछहु जाती आगै जाति न हे'* कहकर समस्त मानवता को एक सूत्र में पिरोने का सफल प्रयत्न किया। गुरू नानक साहिब की विचारधारा द्वारा निर्मित सिख समाज में जात-पात का कोई भेदभाव स्वीकार्य नहीं है। सिख समाज में स्त्री का विशिष्ट स्थान है, उसे पुरुष के समान ही आदर प्राप्त है।

गुरू नानक साहिब की बाणी का कला पक्ष: श्री गुरू नानक देव जी ने भाषा के माध्यम के रूप में यह स्वीकारा है कि काव्य की भाषा लोकभाषा होनी चाहिए। इसी दृष्टिकोण के आधार पर उन्होंने लोक-भाषा को अपनी बाणी का माध्यम बनाया। गुरू जी की भाषा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह सरल, सहज, और बौधगम्य है। गुरू नानक साहिब की बाणी में निर्मल एवं शीतल विचारों व भावों का प्रवाह है। मध्य युग के सर्वोपरि काव्य रचयिता गुरू नानक साहिब ने प्रतीकों, बिम्बों, अलंकारों, छंदों, काव्य रूपों आदि का भी सुन्दर प्रयोग किया है। गुरू नानक साहिब

की बाणी की सबसे बड़ी विशेषता उसकी संगीतात्मकता है। उन्होंने संगीत की शास्त्रीय और लौकिक दोनों ही प्रणालियों को अपनाया है। वस्तुत: उन्होंने संगीत को नई चमक, नई धारणा और आध्यात्मिक लक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने संगीत का महत्व प्रतिपादित करते हुए स्पष्ट कहा है कि इसके द्वारा बाणी का चिन्तन पक्ष स्पष्ट हो जाना चाहिए। गुरू जी के अनुसार केवल वाद्य-यंत्रों के एक सुर में बजने को ही संगीत की संज्ञा नहीं दी जा सकती। संगीत द्वारा अंतिम ध्येय अर्थात् अकाल पुरख की प्राप्ति सुलभ होनी चाहिए। सभी कलाओं को प्रभु-प्राप्ति में सहायक होना चाहिए, जैसे कि:

रागु नादु नही दूजा भाउ ॥
इतु रंगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥
भउ फेरी होवै मन चीति ॥
बहदिआ उठदिआ नीता नीति ॥ *(पन्ना ३५०)*

इस प्रकार कहा जा सकता है कि श्री गुरू नानक देव जी की संगीत-योजना भी श्रेष्ठ है। संगीत के कारण ही गुरू जी की बाणी का निरूपण बहुत ही मनोहर और लोकप्रिय हो गया है।

निष्कर्ष: श्री गुरू नानक देव जी ने रूपाकार और काव्य-कला दृष्टि से अनेक प्रकार की बाणियों का प्रणयन किया है। उनकी लम्बी बाणियों में जपु जी, सिधि गोसटि, वार आसा विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। जपु जी को सिख धर्म-दर्शन का आधार माना जाता है। छोटे आकार की बाणियों में आरती, बारामाहा, असटपदियां आदि उल्लेखनीय हैं। इनमें गुरू नानक साहिब जी ने साधक के मार्ग में पड़ने वाली बाधाओं और गुरू के द्वारा उनके निराकरण की बात कही है। गुरू-कवि द्वारा विरचित वार साहित्य में ब्रह्म, जीवन, प्रकृति की व्याख्या को प्रधानता दी है। इसके साथ ही परमात्मा की प्राप्ति की प्रधान अवरोधक शक्ति 'अहंकार' की व्याख्या और उसका निराकरण किया गया है। संक्षेप में गुरू नानक साहिब की समस्त बाणी में अनेक विषयों को लिया गया है। इस प्रकार बाणी में विविधता मिलती है। आज के युग में गुरू जी की पावन बाणी की उतनी ही महत्ता और उपयोगिता है जितनी गुरू-काल में थी और यह सदैव बनी रहेगी। ■

कविता

वंश से सबको प्यार तो है!

-डॉ. मनजीत कौर

गुल खिले न खिले, कहने को गुलजार तो है!
मंजिल मिले न मिले, सबकी तेज़ रफ्तार तो है!
हाथ में कोई हथियार नहीं, पर मुंह में तेज कटार तो है!
एक खबर भी न पढ़ें हम, घर आती अखबार तो है!
भाषण में कोई सार नहीं, शब्दों की भरमार तो है!
दिल में नहीं निशां प्यार का, कहने को दिलदार तो है!
दहेज लानत है समाज पर, भेंट हमें स्वीकार तो है!
बेटा-बेटी एक समान हैं, पर बेटे का सत्कार तो है!
चलता है बेटे से वंश, और वंश से सबको प्यार तो है।

श्री गुरू नानक देव जी का 'सच्चा सौदा'

-डॉ. रछपाल सिंघ*

सपुत्र को जवान हुआ देखकर पिता मेहता कालू जी ने, श्री गुरू नानक देव जी को सांसारिक कार-विहार करने की इच्छा से २० रुपए दिए और कहा, 'बेटा! जाओ कोई खरा सौदा करके आओ।' गुरू जी सौदा करने गए। रास्ते में गांव चूहड़काणे (अब पाकिस्तान) के बाहर आप जी ने कुछ साधू बैठे देखे जो तन से नंगे और कई दिनों से भूखे थे। परउपकारी और दयावान गुरू जी ने, पिता जी से मिले हुए २० रुपए, उन भूखे साधूजनों को भोजन छकाने और कपड़े देने के लिए खर्च कर दिए। गुरू जी ने उन भूखे साधुओं को गृहस्थ जीवन के साथ अपने हाथों से किरत करने और प्रभु-भक्ति करने का उपदेश दिया। गुरू जी ने उन्हें आलस का त्याग करके, उद्यमी और परिश्रमी जीवन व्यतीत करने के बारे भी कहा। गुरू जी ने उनको उपदेश किया कि गृहस्थ-मार्ग और किरत छोड़ कर, जंगलों, पहाड़ों पर अतीत की भक्ति व्यर्थ है क्योंकि पेट की खातिर फिर आपको गृहस्थी लोगों के घर पर मांगने के लिए जाना पड़ता है। आलसी, रोगी और कई दिनों से भूखे साधुओं ने पेट भर खाना खाया, गुरू जी का उपदेश सुना और फिर उनको वास्तविक जीवन की सूझ पड़ी। गुरू जी ने उन्हें 'सच' दिया अथवा उन्होंने गुरू जी से 'सच' लिया। उन्होंने सच्चा जीवन व्यतीत करने का प्रण किया। इसलिए इस घटना को 'सच्चा सौदा' की संज्ञा दी जाती है। जब वापिस घर लौटे तो पिता जी बहुत क्रोधित हुए।

'सच्चा सौदा' एक जीवन-जाच है। यह गुरमति-मार्ग है। 'सच्चा सौदा' नाम है, प्रभु-सुमिरन है। 'सच्चा सौदा' सच का व्यापार है। इस व्यापार में न तो कोई भ्रम है और न ही पाखंडवाद, आडंबर। इस व्यापार में कभी भी घाटा नहीं पड़ता। यह सदा ही बढ़ता है। इस विचार की सूझ किसी गुरमुख को ही आई है। किसी विरले गुरमुख को ही 'सच्चा सौदा' प्राप्त होता है:

सचा सउदा विरला को पाए ॥
पूरा सतिगुरु मिलै मिलाए ॥
गुरमुखि होइ सु हुकमु पछाणै
मानै हुकमु समाइदा ॥ (पन्ना १०३६-३७)

'सच्चा सौदा' जिस सौदागर के पास है, उसी की दुकान 'सच्ची' है। उसमें अमूल्य पदार्थ हैं, रत्नों अर्थात गुणों के भंडार भरे पड़े हैं:

सचा सउदा हटु सचु रतनी भरे भंडार ॥
गुर किरपा ते पाईअनि जे देवै देवणहारु ॥
(पन्ना ६४६)

श्री गुरू नानक देव जी का 'सच्चा सौदा', भूखे को भोजन और नंगे को वस्त्र देने तक ही सीमित नहीं समझ लेना चाहिए बल्कि गुरू जी ने इसके बारे में स्पष्ट किया है कि 'सच्चा सौदा' तो 'सच' का व्यापार है, जिसके पास 'सच्चा सौदा' होता है, उसी को ही प्रभु की पहचान होती है:

सचा सउदा सचु वापारा ॥
न तिथै भरमु न दूजा पसारा ॥
सचा धनु खटिआ कदे तोटि न आवै बूझै को वीचारी हे ॥ (पन्ना १०५०)

सद्गुणों को गृहण करना, हउमै की मैल

*पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय खोज केंद्र, गुरदासपुर (पंजाब)-१४३५१८।

खत्म करना, प्रभु-नाम के रंग में रंगे रहना ही 'सच्चा सौदा' है:

गुरमुखि गुण वेहाझीअहि मलु हउमै कढै धोइ ॥
सचु वणंजहि रंग सिउ सचु सउदा होइ ॥

(पन्ना ३११)

'सच्चा सौदा' तो अमूल्य प्रेम पदार्थ है, जिसके हृदय में सच हो, उसी से 'सच्चा सौदा' प्राप्त होता है:

प्रेम पदारथु लहै अमोलो ॥
कब ही न घाटसि पूरा तोलो ॥
सचे का वापारी होवै सचो सउदा पाइदा ॥

(पन्ना १०३६)

आज कल 'सच्चा सौदा' के नाम पर 'कूड़' का व्यापार हो रहा है। डेरेदार अपने आप को, अपने द्वारा बेचे जा रहे सौदे को 'सच्चा सौदा' कह कर बेच रहा है। उसके पास गुरू जी जैसा 'सच्चा सौदा' तो है नहीं, उसके भीतर कूड़ और विष भरी हुई है पर बाहर का लेबल श्री गुरू नानक देव जी वाले 'सच्चे सौदे' का लगाया हुआ है। ये लोग बहुत चालाक हैं। भोले-भाले अज्ञानी लोगों को धर्म के नाम पर अपने भ्रमजाल में फंसा कर, नकली सौदा बेचकर, खूब धन इकट्ठा कर रहे हैं। एयरकंडीशन कारें, आलीशान कोठियां, अरबों रुपयों की नामी-बेनामी जायदाद इन सौदे वालों ने बना रखी है। बाकी डेरेदार तो किसी हदबंदी में यह व्यापार कर रहे हैं पर कुछ ऐसे हैं जो खुद खुदा बन बैठे हैं। गुरू नानक साहिब के 'सच्चे सौदे' के सिद्धांत से वे कोसों दूर हैं। वे खुद 'सच्चा सौदा' बनाने के झूठे दावे कर रहे हैं जो वास्तव में कूड़ ही कूड़ है, धोखा है, फरेब है। अब सिरसे वाले ढोंगी बाबे ने तो हद ही कर दी। खुद ही श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी बन कर रूहअफजा का बाटा तैयार करके, अपनी झूठ की दुकान चमकाने के लिए एड़ियां उठाये दीख रहा है। परंतु झूठ की दुकान पर 'सच्चा सौदा' कभी भी नहीं हो सकता। 'सच्चा सौदा' तो गुरू-कृपा से प्राप्त होता है। जिन लोगों के पास झूठ है, उनको सच अच्छा नहीं लगता, क्योंकि वे लोग कूड़िआर हैं:

जिना अंदरि कूड़ु वरतै सचु न भावई ॥
जे को बोलै सचु कूड़ा जलि जावई ॥
कूड़िआरी रजै कूड़ि जिउ विसटा कागु खावई ॥

(पन्ना ६४६)

असल 'सच्चे सौदे' का व्यापार केवल वो मनुष्य ही कर सकता है जिस ऊपर प्रभु कृपा करता है और प्रभु की कृपा उसी पर होती है जिसके हृदय में सच हो तथा प्रभु के सद्‌गुणों का निवास हो। सच का व्यापार करने वाले का फिर लेखा नहीं होता, वो मुक्त हो जाता है:

हरि हरि वणजु सो जनु करे जिसु क्रिपालु होइ प्रभु देई ॥
जन नानक साहु हरि सेविआ फिरि लेखा मूलि न लेई ॥

(पन्ना १६५)

नि:संदेह श्री गुरू नानक देव जी का 'सच्चा सौदा' मनुष्य को सही इंसान बनाता है, मनुष्य इस संसार में जिस उद्देश्य के लिए आया है, उसकी सोझी करवाता है। गृहस्थ जीवन की जिम्मेवारियां निभाते हुए, रोजी-रोटी के लिए खुद किरत करके, गुरमति-मार्ग पर चलने की युक्ति सिखाता है। सेवा, सुमिरन, परोपकार, सतिसंगत, सच-आचारी जीवन, गुरू नानक-मार्ग के लक्षण हैं। अगर कोई मनुष्य अपनी दुकान (डेरे) पर 'सच्चा सौदा' का लेबल लगाकर, इसकी आड़ में अनेक प्रकारों के कुकर्म करे, लोगों का मानसिक व शारीरिक शोषण करे तो वह परमेश्वर की नज़रों में केवल गुनहगार है तथा एक दिन दुनिया के सामने उसका असली चेहरा अवश्य नंगा हो जाता है और असलियत अथवा 'सच' सामने आ जाता है:

कूड़ निखुटे नानका ओड़कि सचि रही ॥ *(पन्ना ९५३)*

■

साम्प्रदायिक सद्‌भावना एवं एकता के सेतुबंध-गुरू नानक देव जी

*-श्री प्रवीण कुमार**

इस संसार में अनेक धर्म हैं, जिनका प्रचलन उन महापुरुषों, अवतारों एवं पैगम्बरों ने समाजोत्थान एवं मानव-कल्याण हेतु किया था। ऐसे ही महापुरुषों में भक्ति आंदोलन के अग्र श्री गुरू नानक देव जी का नाम विशेष उल्लेखनीय है जिन्होंने आज से पाँच सौ से अधिक वर्ष पूर्व तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक विषमताओं को दूर करने, समाज में नवीन चेतना जागृत करने, तत्कालीन धार्मिक आडम्बरों तथा ब्राह्मणों की सत्ता का विरोध करने के लिए सिख धर्म की स्थापना की।

श्री गुरू नानक देव जी का जन्म सन् १४६९ ई में लाहौर से ६५ किलोमीटर दूर दक्षिण-पश्चिम में स्थित तलवंडी नामक स्थान पर हुआ था। श्री गुरू नानक देव जी के सम्मान में तलवंडी को अब 'ननकाणा साहिब' कहा जाता है, जो इस समय पाकिस्तान में है। गुरू जी के माता जी का नाम, माता तृप्ता जी और पिता जी का नाम श्री कल्याण दास था, किन्तु वे 'मेहता कालू' के नाम से ही विख्यात थे। मेहता कालू क्षत्रिय वर्ण के बेदी वंश से संबंध रखते थे। उस समय तलवंडी के जमींदार राय बुलार थे। मेहता कालू, राय बुलार के पटवारी थे। वे बहुत परिश्रमी, ईमानदार, समृद्ध एवं सुखी थे।

आपके जन्मोत्सव पर आपके पिता ने प्रतिष्ठित एवं गणमान्य व्यक्तियों को आमंत्रित करके विशेष उत्सव मनाया। बहन 'नानकी' के नाम के अनुकरण पर शिशु का नाम 'नानक' रखा गया। पांच वर्ष की अल्प अवस्था में ही श्री गुरू नानक देव जी धर्म और ईश्वर संबंधी बातों में रुचि लेने लगे। वे प्राय: साथियों को अपने चारों ओर बैठा लेते और उनसे भजन-कीर्तन करने को कहते। वे स्वयं भी उस कीर्तन में भाग लेते। जब वे अकेले होते तो अधमुंदे नेत्रों से चिंतन में खोये रहते। पिता कालू को अपने इकलौते पुत्र की यह प्रवृत्ति जरा भी अच्छी नहीं लगती थी। वे अपने पुत्र को सांसारिक धनी-मानी व्यक्ति के रूप में देखना चाहते थे।

श्री गुरू नानक देव जी जब नौ वर्ष के हुए तो पिता मेहता कालू ने उनका यज्ञोपवीत संस्कार करना चाहा। शुभ मुहूर्त निश्चित किया गया। सभी इष्ट-मित्र, संबंधी आदि आमंत्रित किये गये। सारे संस्कार जब समाप्त हो गये तब कुटुम्ब के पुरोहित पं. हरदयाल ज्योतिषी ने यज्ञोपवीत हाथ में लेकर बालक से कहा, 'बच्चा! यह यज्ञोपवीत धारण करो।' श्री गुरू नानक देव जी ने कहा, 'पंडित जी! कृप्पा पहले मुझे यह बताए कि इसके धारण करने से क्या लाभ होगा?' पंडित हरदयाल ने कहा, 'बच्चा! यह तुम्हें लोक-परलोक में प्रतिष्ठा दिलायेगा।' श्री गरू नानक देव जी ने तर्कपूर्ण ढंग से कहा, 'कपास से बना यह यज्ञोपवीत किसी को परलोक में किस प्रकार प्रतिष्ठा दिला सकता है? यह तो पंचभौतिक शरीर के साथ यहीं रह जाता है। मुझे ऐसा

**डी-१२०९, डबुआ कालोनी, फरीदाबाद-१२१००१ (हरियाणा)*

यज्ञोपवीत धारण करायें जो मेरे साथ परलोक में जा सके।' पुरोहित हरदयाल बाल नानक के इस तर्क से आश्चर्यचकित और निरुत्तर हो गये।

गुरू जी का बाल्यकाल ईश्वर-भक्ति से परिपूर्ण था। एक बार वे खेलकर बहन नानकी के साथ घर लौट रहे थे। रास्ते में उन्होंने देखा कि एक बच्चा जो शीत से ठिठुर रहा था, आपने अपनी कमीज उतार कर उस बच्चे को दे दी। बहन नानकी का मन अपने भाई की दानशीलता पर मुग्ध हो गया। वह समझ गयी थी कि उसका 'वीर' कोई असाधारण तेजस्वी है जिसे उसके संसारी पिता समझ नहीं सके हैं। पिता कालू ने श्री गुरू नानक देव जी को उनकी दानशीलता पर कई बार फटकारा और मारा-पीटा भी, किन्तु श्री गुरू नानक देव जी की दानशीलता में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

पिता जी ने उन्हें संवत् १५३२ में गोपाल दास पंडित की पाठशाला में हिन्दी पढ़ने भेजा तथा संवत् १५३९ में मौलवी मोहम्मद कुतुबदीन के पास फारसी पढ़ने के लिए बैठाया, किन्तु श्री गुरू नानक देव जी पाठशाला में पढ़ने-लिखने के बजाय ज्ञान और भक्ति की बातें करते। एक दिन पंडित जी ने कहा, 'तुमको एक अक्षर भी नहीं आ सका, मैंने तुम्हारे पिता से कह दिया है।' श्री गुरू नानक देव जी हंसकर बोले, 'इस संसार में आजकल 'अक्षर' (अमर परमात्मा) को लिखता-पढ़ता कौन है? यदि 'एक अक्षर' का ज्ञान सभी को हो जाये तो फिर जन्म और मृत्यु में अंतर ही क्या रह जाये!' आश्चर्यचकित पंडित जी के मुख से इतना ही निकला, 'नानक देव!' उन्हें लगा कि उस नन्हें से बालक के ज्ञान के सम्मुख उनका ज्ञान-कोष रिक्त हो गया है।

श्री गुरू नानक देव जी दिन-रात ईश्वर-चिन्तन और उसके गुण-कीर्तन में मग्न रहते, यहां तक कि उन्हें खाने-पीने की भी सुध नहीं रहती। पिता ने समझा कि वे रोगी हो गये हैं, अत: वैद्य को बुलाया गया। वैद्य ने श्री गुरू नानक देव जी की नाड़ी देखी, लेकिन रोग का पता न लगा पाया। तब आप जी ने कहा:

वैदु बुलाइआ वैदगी पकड़ि ढंढोले बांह ॥
भोला वैदु न जाणई करक कलेजे माहि ॥

(पन्ना १२७९)

पीड़ा तो श्री गुरू नानक देव जी के हृदय में थी, उसे नाड़ी टटोलने वाला वैद्य भला क्या समझ पाता? अत: वह हैरान सा होकर वापिस चला गया।

आपका मन व्यापार की ओर आकर्षित करते हुए आपके पिता ने आपको बीस रुपये देते हुए कहा, 'पुत्र! भाई बाला के साथ तुम लाहौर जाओ, कोई सच्चा सौदा करो।'

पिता की आज्ञा पाकर श्री गुरू नानक देव जी भाई बाला जी को लेकर भ्रमण कर रहे हैं। चूहड़काणे के पास आपने भूखे साधू देखे। आपने अपने साथी से कहा, 'भाई बाला! पिता जी ने सच्चा सौदा करने को कहा है, देखो इससे सच्चा सौदा और क्या होगा कि इन भूखों को भोजन कराया जाये।' उन्होंने पास के गांव से खाने का सामान मंगाकर भूखे साधुओं को भरपेट खिलाया और श्रम करके जीवन-यापन करने की शिक्षा दी। भूखे रहना आत्मा को दुख देना है तथा मांग कर खाना, मेहनत करने से दूर भागना है। वे तलवंडी लौट आये। दोनों को खाली हाथ आया देखकर पिता के पांव तले की जमीन खिसक गई। सारी घटना सुनकर मेहता कालू

जी माता तृप्ता जी से बोले, 'तेरे बेटे को भेजा तो कमाने के लिए था पर सारी पूंजी गंवा आया है तेरा लाडला सपूत।' श्री गुरू नानक देव जी ने कहा, 'मैंने तो कई दिनों के भूखों को खाना खिलाकर सच्चा सौदा ही किया है पिता जी! और साथ ही उन्हें श्रम करने की शिक्षा भी दी है। धन इकट्ठा करने से भी भला मन को शांति मिल सकती है? कर्म करते हुए अपना ध्यान वाहिगुरू में लगाना, भले लोगों की संगत करना और नाम में लीन हो जाना, यही तो सच्चा सौदा है।'

चिंतित पिता ने श्री गुरू नानक देव जी को अपने दामाद भाई जयराम (बहन नानकी जी के पति) के साथ सुल्तानपुर भेज दिया। आपको मोदीखाने (सरकारी अनाज की दुकान) में मोदी का काम मिल गया। मोदीखाने में आटा तौलते समय कभी-कभी आप 'तेरह' की गिनती के बाद 'तेरा-तेरा-तेरा' ही कहते रहते जिसका तात्पर्य था कि इस संसार में जो कुछ भी है वह ईश्वर का ही है। मनुष्य तो खाली हाथ आता है और खाली हाथ ही खुदा के घर जाता है। आप कहते थे:

विचि दुनीआ सेव कमाईऐ ॥
ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥ *(पन्ना २६)*

अर्थात परमात्मा के चरणों में उसी को स्थान मिलता है, जो उसके बनाये हुए जीवों से प्रेम करता है।

गुरू जी अपने काम के साथ-साथ गरीबों और दुखियों को मुफ्त खिलाते, साधू-संतों की सेवा करते, प्रभु का स्मरण करते। कुछ चुगलखोर कर्मचारियों ने सूबेदार दौलत खां के कान भरे, लेकिन आपने अपना जीवनक्रम नहीं बदला। गुरू जी का विवाह ज्येष्ठ माह संवत् १५४४ में बाबा मूलचंद की सपुत्री माता सुलक्खणी जी के साथ बटाला में सम्पन्न हुआ। आपके घर पुत्र बाबा श्रीचंद जी तथा बाबा लखमी दास जी उत्पन्न हुए। आप गृहस्थी के कर्त्तव्य भी निभाते रहे लेकिन आपका मुख्य जीवन-लक्ष्य सत्य व धर्म का प्रचार-प्रसार ही रहा।

जब आप जी के पिता जी ने आपकी कुशल-क्षेम जानने के लिए भाई मरदाना जी को भेजा तो वे भी गुरू जी के पक्के साथी तथा परम-भक्त हो गये। भाई मरदाना जी श्री गुरू नानक देव जी के साथ अपना रबाब बजाकर शब्द गाया करते थे।

श्री गुरू नानक देव जी उसके साथ देश-विदेश की यात्रा पर निकल पड़े। चलते-चलते वे ऐमनाबाद पहुंचे। वहीं उन्होंने भाई लालो नामक निर्धन किन्तु ईमानदार बढ़ई का आतिथ्य स्वीकार किया तथा कपटी और लालची क्षत्रिय दीवान मलिक भागो का निमंत्रण अस्वीकार कर दिया। इस प्रकार श्री गुरू नानक देव जी ने कभी भी लोगों को हिंदू और मुसलमानों में बांटकर उपदेश नहीं दिया वरन् उनका एकमात्र उद्देश्य मानव-कल्याण था। आपका कहना था कि जब बच्चा जन्म लेता है तो वह न हिन्दू होता है और न मुसलमान। उस वक्त उसका एकमात्र धर्म इंसानियत होता है। नि:संदेह ऊंच-नीच, जाति-प्रथा, साम्प्रदायिकता, छल-कपट, धर्म-विषयक भेदभाव को दूर करते हुए श्री गुरू नानक देव जी का धर्म प्रचार व समाज सुधार का यात्राक्रम निरंतर चलता रहा और उन्होंने गुरू-भक्ति, एकता, बन्धुत्व, समानता, सहयोग, सदभावना एवं सहिष्णुता आदि उपदेशों को अपनी बाणी में लिपिबद्ध किया।

ईश्वर की उपासना श्री गुरू नानक देव जी का एकसूत्रीय कार्यक्रम था। उन्होंने अत्यन्त मार्मिक शब्दों में कहा है, *'आखा जीवा विसरै*

मरि जाउ ॥' अर्थात हे प्रभु! जब मैं तुम्हें याद करता हूं तो मैं समझता हूं कि मैं जीवित हूं और जब तुम्हें भूल जाता हूं तो मेरी वह अवस्था मृत्यु के समान होती है। श्री गुरू नानक देव जी ने अपनी पावन बाणी द्वारा मनुष्य को नेक कमाई करके खाने का उपदेश देते हुए कहा है:

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥
(पन्ना १४१)

अर्थात किसी का हक मारना मुसलमानों के लिए सूअर खाने के तथा हिंदुओं के लिए गाय खाने के तुल्य है।

श्री गुरू नानक देव जी अपने समाज के सच्चे पथ-प्रदर्शक थे। उन्होंने निर्भीक होकर समाज की कुरीतियों और तत्कालीन समाज के भेदपूर्ण व्यवहार तथा अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाई। आप जी ने नारी जाति के उत्थान के लिए सतत् प्रयत्न किये, जीवन के तीनों अंगों का महत्व प्रतिपादित किया। वे अंग थे- अच्छा काम करना, सबके साथ मिलकर खाना और ईश्वर का नाम-स्मरण करना। उन्होंने सब मनुष्यों को समान कहा और अत्याचार को सहना निंदनीय बताया। उन्होंने एकेश्वरवाद के सिद्धांत की स्थापना की। उनका कहना था कि ईश्वर निरवैर, निष्पक्ष, निडर, अकाल और अभय है।

वस्तुत: श्री गुरू नानक देव जी मानवता के उपासक थे। मानव-जाति की सेवा और ईश्वर का भजन ही उनके दो परम कर्त्तव्य थे। उन्होंने अपनी ७० वर्ष की संसार यात्रा में भारत के अतिरिक्त काबुल, अरब, तिब्बत आदि कई देशों की भी यात्राएं कीं, जिनसे आपने पारस्परिक भेद-भाव, द्वेष-भावना, छूआछूत आदि बुराइयों को अपनी अमृत-बाणी के प्रचार से दूर किया तथा लोगों को अंधकार व रूढ़िवादिता में से निकालकर यथार्थवादिता और विशाल हृदयता के मार्ग पर अग्रसर किया।

आज के भौतिकवाद के दौर में जब देश के चारों ओर क्षेत्रवाद, जातिवाद, धार्मिक विवाद, विघटनवाद एवं भ्रष्टाचार आदि का सर्वत्र साम्राज्य है, ऐसी विकट एवं विषम परिस्थितियों में हम सबका पुनीत कर्त्तव्य है कि हम श्री गुरू नानक देव जी द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों, उपदेशों एवं शिक्षाओं का अनुसरण करके मानव कल्याणार्थ एवं सर्वांगीण विकास हेतु संकल्प लें, जिससे कि आज के अशांतिपूर्ण वातावरण में श्री गुरू नानक देव जी की समस्त मानवता के साथ प्यार व सर्वसांझीवालता सिखलाने वाली अमर बाणी को हम सार्थक सिद्ध करने में पूर्णरूपेण सक्षम हो सकें। ■

लेखकों प्रति विनती

* *मान्यवर लेखकगण रचनाएं लिखते समय केवल गुरबाणी तथा भाई गुरदास जी की वारों या सिख-स्रोत ग्रंथों से ही पंक्तियां लिया करें।*
* *श्री गुरू ग्रंथ साहिब में मनुष्य की प्रत्येक समस्या का हल, आवश्यकता की पूर्ति तथा इच्छित दिशा हेतु मार्गदर्शन के लिए बेअंत भंडार मौजूद है।*
* *रचनाएं साफ-स्वच्छ लिखकर या टाईप कराकर ही भेजी जाएं।*
* *रचनाएं "संपादक, गुरमति ज्ञान, शि. गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर" के पते या **e-mail: gyan_gurmat@yahoo.com** पर भेजी जाएं।*



बाबा नानक

-डॉ. नरेश*

जब सारा भारत मोहाच्छन्न,
तिमिर से युक्त, भ्रमित, पथभ्रष्ट, चेतनाहीन
अधोमुख, स्व-महत्व से अनजाना,
छटपटा रहा था।
वही सत्य है,
ब्रह्म एक, दूसरा नहीं है
बाबा नानक ने सीधी-सादी भाषा में बोला-
सार्वभौम, सर्वेश, सदाशिव, मंगलरूप प्रभु
है केवल निरंकार।
वह अलख, निरंजन, संकट-मोचन,
भव-भय हारण, निर्भय
जिसका आदि नहीं है, अंत नहीं है।
और कहा गुरू नानक ने-
मिलकर काम करो, मिलजुल कर खाओ।
आधि-व्याधि के चक्रव्यूह में उलझा मानव,
बाबे नानक के सम्मुख,
एक अबोध अंजाने शिशु-सा,
पथ भूला-सा, किंकर्त्तव्यविमूढ़ खड़ा था।
बाबा नानक ने पुचकारा, दुलराया
और उसे सत्य की सीधी-सरल
राह दिखलाकर कहा-
नाम का सम्बल लेकर चलो,
मार्ग की सब बाधाएं हट जाएंगी।
बाबा नानक की आत्मा निश्चित बड़ी सबल थी,
अन्तर्दृष्टि हम से, तुम से,
कहीं अधिक पैनी, गहरी थी,
उसमें निहित कहीं दैवी प्रकाश था निश्चित।

*१६१, सेक्टर-१७, पंचकूला-१३४१०९

जगत गुरू नानक

-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ*

बह निकली विचारों की धारा।
बन गया एक पंथ न्यारा।
आदि गुरू जगत गुरू नानक।
गुरदेव युगांतर सच मोती माणक।
सतिनाम की एक लहर चलाई।
घर-घर पहुंची जैकार बुलाई।
संघर्षों की वैतरणी तरना।
संघर्षों से कभी न डरना।
आदर्शों की खातिर जान हथेली।
जानी सफलता की कठिन पहेली।
जीवन में की नेक कमाई।
भक्ति-भाव से शोभा पाई।
राम-नाम के बजे नगाड़े।
न कोई मोल न मांगे भाड़े।
सेवा-साधना की जोत जलाई।
सब संगत कहती भाई-भाई।
सदियों से दुख झेलती नारी।
विचार संहिता बदल उभारी।
राजे रंक जाने एक समाना।
ऊंच-नीच कोई नहीं जाना।

*पत्तन वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर।

आज बहुत याद आते हैं गुरू नानक देव जी

-डॉ. दीनानाथ शरण*

सिख-सम्प्रदाय के प्रवर्तक, सिखों के आदि-गुरू और महान धर्म-समाजोद्धारक श्री गुरू नानक देव जी अद्वितीय बाणीकार थे। उनकी पावन बाणी भावना और विचार का समय है। जब भावना और विशिष्ट विचार का संगम होता है तो श्रोता रसविभोर भी होता है तथा विवेक की प्राप्ति भी करता है।

उच्च विचारों से दीपित उनकी बाणी प्रासंगिकता में आज भी बेजोड़ है, अनुपम है, बेमिसाल है। आज के नेता कहते तो हैं कि जात-पात, धार्मिक-सामाजिक भेद-भाव ठीक नहीं, परन्तु चुनाव जीतने, मंत्री बनने, 'सत्ता' हथियाने के लिए भरपूर जात-पात करते हैं, विभिन्न धर्मों के लोगों को आपस में लड़वाते हैं, अगड़े-पिछड़े का भेद-भाव फैलाकर अपना उल्लू सीधा करते हैं। आज इसीलिए पूरा देश बदहाल है, तबाह है। ऐसे में बहुत याद आते हैं श्री गुरू नानक देव जी, जिन्होंने सैकड़ों-सैकड़ों साल पहले डंके की चोट पर कहा था-*'ना को हिंदू न मुसलमान ॥'*

उन्होंने तथाकथित नीच से नीच जाति को भी महत्व दिया, जैसे कि:

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥
जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस ॥
(पन्ना १५)

सामाजिक न्याय का ढोंग करके, 'सत्ता की राजनीति' करने वालों को जानना चाहिए कि गुरू नानक साहिब ने शोषण का जो विरोध किया क्या वे उस अनुसार थोड़ा सा भी व्यवहार कर रहे हैं? *'हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥'* पूंजीपति सेठ 'मलिक भागो' के निमंत्रण को ठुकराकर बढ़ई 'भाई लालो' के घर रूखी-सूखी रोटी खाकर गुरू नानक साहिब जी ने यही संदेश दिया कि जात-पात का भेद-भाव करना गलत है, धनवान सेठों को महत्व देना गलत है। ऐसे माहौल को देखकर आज हमें बहुत याद आते हैं श्री गुरू नानक देव जी।

आज लोग दूसरों की धन-दौलत, जमीन-जायदाद हड़प कर मालामाल हो रहे हैं। कुछ नहीं, तो पड़ोसी की जमीन हथिया ली, पैसे मार लिये। सरकार के मंत्री-अफसर तो सरकार यानी आम-जनता का ही माल हड़प रहे हैं, बड़े से बड़े घोटाले करने का रिकार्ड बना रहे हैं। सी. बी. आई. के स्पेशल कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट तक मुकद्दमे लड़ रहे हैं, अपने बचाव के लिए उन्होंने घोटाले नहीं किये, जबकि जग-जाहिर हैं उनके काले

*दरियापुर गोला, बाँकीपुर, पटना-८०००४ (बिहार)

कारनामे! ऐसे में हमें बहुत याद आते हैं श्री गुरू नानक देव जी जिन्होंने निर्भय होकर दो-टूक कहा था कि दूसरों का हक हड़पना लहू पीना है:

जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु ॥
जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥
(पन्ना १४०)

पहले अंग्रेजों के शासन काल में गिनी-चुनी दुकानें थीं शराब की। आज छोटे से छोटे शहर-कस्बों में भी कई-कई दुकानें हैं शराब की। अवैध बिक्री का जो बाजार गर्म है सो अलग। तरह-तरह के मादक द्रव्यों की बिक्री खुलेआम हो रही है और समाज-कल्याण का ढोंग करने वाली वर्तमान सरकारें कमजोर भी हैं और भ्रष्ट भी। ऐसे में, क्यों न हमें बहुत याद आयें श्री गुरू नानक देव जी जिन्होंने फरमान किया था:

सभि रस मिठे मंनिऐ सुणिऐ सालोणे ॥
खट तुरसी मुखि बोलणा मारण नाद कीए ॥
छतीह अंम्रित भाउ एकु जा कउ नदरि करेइ ॥
बाबा होरु खाणा खुसी खुआरु ॥
जितु खाधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥
(पन्ना १६)

वस्तुत: श्री गुरू नानक देव जी महज धर्म-प्रवर्तक और प्रचारक मात्र ही नहीं थे, बल्कि महान् धर्म-सामाज-सुधारक भी थे। उन्होंने धर्म और समाज में व्याप्त बुराइयों का जबरदस्त विरोध किया और सदाचरण का संदेश दिया। श्री गुरू नानक देव जी महान क्रांतिकारी थे, सच्चे अर्थों में क्रांतिकारी। 'सामाजिक न्याय', 'सम्पूर्ण क्रांति' की बात करने वाले आज के नेताओं की तरह नारेबाजी और भाषणबाजी करने वाले नहीं बल्कि उन्होंने व्यापक मानव-कल्याण के हेतु सुदूर देशों की यात्राएं की थीं और वे भी उस जमाने में जब न रेल थी, न हवाई जहाज और आधुनिक वैज्ञानिक साधन भी नहीं थे। तब भी समाज में सुधार के लिए, धर्म के उत्थान के लिए गुरू नानक साहिब ने जो कठोर यात्राएं की, वे उनकी सच्ची मानव-सेवा और निष्ठा का ठोस प्रमाण हैं। आज के समय में तो उनके संदेशों की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ गई है। आज हम सबको गुरू नानक देव जी के उपदेश याद रखकर अगुआई एवं प्रेरणा लेकर समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध लड़ना होगा। ■

सूचना

* पाठकगण चंदा भेजते समय बैंक ड्राफ्ट या मनीआर्डर "सचिव, धर्म प्रचार कमेटी (शि: गु: प्र: कमेटी) श्री अमृतसर" के नाम ही भेजें।
* नए पाठकों को पत्रिका प्राप्त करते समय अपने पते के साथ अपने चंदे की अवधि सीमा की जानकारी निरंतर मिलती रहेगी। पाठकगण अवधि सीमा समाप्त होने से पूर्व चंदा भेजकर लगातार पत्रिका प्राप्त करने का आनंद लेते रहें।
* अब 'गुरमति ज्ञान' को वैबसाईट **www.sgpc.net** पर भी देख/पढ़ सकते है।

श्री गुरू तेग बहादर जी की अद्वितीय कुर्बानी

*-डॉ मनमोहन सिंघ**

संसार के इतिहास में सिखों द्वारा की गई कुर्बानियां बेमिसाल हैं। सिख धर्म की नींव श्री गुरू नानक देव जी ने रखी और शहीदी की रस्म शहीदों के सिरताज श्री गुरू अरजन देव जी द्वारा शुरू की गई। परंतु श्री गुरू तेग बहादर जी की शहादत के समान कोई मिसाल नहीं मिलती, क्योंकि कातिल तो मकतूल के पास आता है, परंतु मकतूल कातिल के पास नहीं जाता। गुरू साहिब जी की शहादत संसार के इतिहास में विलक्षण है, जो उन मान्यताओं व धर्म के लिए दी गयी जिनके ऊपर गुरू साहिब का अपना विश्वास नहीं था। श्री गुरू नानक देव जी ने जनेऊ धारण करने से इन्कार कर दिया था और हिन्दू रीति-रिवाजों से हटकर अलग गुरमति जीवन-युक्ति की शुरूआत की। परंतु जब धार्मिक स्वतंत्रता को कायम करने की आवश्यकता प्रतीत हुई तो नवम गुरू जी ने अपना शीश तक दे दिया। दसवें गुरू जी ने लिखा है:

तिलक जंञू राखा प्रभ ता का।
कीनो बडो कलू महि साका ॥ (बचित्र नाटक)

श्री गुरू तेग बहादर जी ने अपना जीवन लोगों की धार्मिक स्वतंत्रता व रक्षा के लिए कुर्बान कर दिया। श्री गुरू नानक देव जी द्वारा चलाये धर्म के बुराई विरोधी मूल भाव को दशमेश पिता ने व्यवहारिक रूप दिया, मतलब खालसा सजाया। गुरू जी ने धर्म का बुनियादी सिद्धांत नहीं बदला तथा परोपकार व बेसहारों की रक्षा करने का ही उपदेश दिया। शासकों द्वारा किये जा रहे जुल्म से छुटकारा पाने के लिए बहु-संख्यक हिन्दू जाति ने देश के कोने-कोने में जाकर मंदिरों के दरवाजे खटखटाये, सूर्यवंशी व चन्द्रवंशी राजाओं एवं महाराजाओं के पास जाकर प्रार्थना की परन्तु कोई भी उनके धर्म की रक्षा के लिए औरंगजेब के पास जाने को तैयार नहीं हुआ।

आखिर कश्मीरी पंडित श्री गुरू तेग बहादर जी के पास आये और अपनी दर्द भरी कहानी सुनाई। गुरू जी ने इस समस्या के हल के लिए गहन चिंतन किया। तभी बाल गोबिंद राय जी (श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी) बाहर से खेलते हुए आये और पिता जी को सोच की मुद्रा में देखकर पूछा-'पिता जी, क्या बात है? आप किस गहरी सोच में हो ?' गुरू साहिब जी ने कहा-'ये लोग विपदा में हैं। इनका धर्म संकट में है। इनके धर्म की रक्षा के लिए किसी महान व्यक्ति की कुर्बानी की जरूरत है। तत्पश्चात गुरू जी को बाल गोबिंद राय जी ने कहा, 'पिता जी! इस समय भला आप जी से अधिक महान व्यक्ति और कौन हो सकता है? आप इन दुखियों के धर्म-संकट को अवश्य निवारें।' गुरू जी को निश्चय हो गया कि बाल गोबिंद राय सिखों की अगुआई के लिए पूर्णत: सक्षम हैं। गुरू साहिब जी ने पंडितों को कहा-'जाओ, औरंगजेब

**८८९, फेज-१०, मोहाली-१६००६२*

को कह दो कि अगर तुम गुरू तेग बहादर जी को मुसलमान बना दो तो हम सभी स्वत: ही मुसलमान हो जाएंगे।

इसके बाद गुरू जी दिल्ली की तरफ चल पड़े और रास्ते में लोगों को गुरमति का ज्ञान बांटते, धैर्य प्रदान करते हुए, परमात्मा का नाम जपने का उपदेश देते रहे और चलते-चलते दिल्ली पहुंच गये।

दिल्ली में हकूमत ने उन्हें कई प्रकार के भय तथा लालच दिये परंतु गुरू जी ने शहीदी के मार्ग को अपनाने का निर्णय लिया। आपने धर्म-परिवर्तन और करामात दिखाने की प्रेरणा को जरा भी स्वीकार नहीं किया। अंत में आप जी को चांदनी चौंक, दिल्ली में ११ नवंबर १६७५ ई में आपके पावन शीश पर जल्लाद के द्वारा तलवार चलाकर शहीद कर दिया गया। आपकी महान कुर्बानी संबंधी लिखा है:

ठीकरि फोरि दिलीसि सिरि प्रभ पुर कीया पयान ॥
तेग बहादर सी क्रिआ करी न किनहूं आन ॥१५॥
तेग बहादर के चलत भयो जगत को सोक ॥
है है है सभ जग भयो जै जै जै सुर लोक ॥१६॥
(बचित्र नाटक)

गुरू साहिब जी ने अपनी जिंदगी को दूसरों के धर्म की रक्षा व जुल्म को समाप्त करने के लिए कुर्बान कर दिया। पाठकों की जानकारी के लिए गुरू जी का संक्षिप्त जीवन इस प्रकार है:

गुरू साहिब जी का जन्म ५ वैशाख सं. १६७८ (१ अप्रैल, १६२१ ई) में माता नानकी जी के उदर से छठे गुरू श्री गुरू हरिगोबिंद साहिब जी के घर में हुआ। गुरू जी का पहला नाम त्याग मल था। साहिबजादा त्याग मल जी को भाई प्रतापा, भाई कल्याण सूद, भाई पिरागा व भाई भादू जैसे बहादुरों ने शस्त्र-विद्या सिखाई तथा भाई गुरदास जी जैसे विद्वानों ने धार्मिक शिक्षा दी। गुरू जी का विवाह माता गुजरी जी के साथ हुआ। गुरू जी शस्त्र-विद्या में इतने निपुण हो गए थे कि आपकी बहादुरी को करतारपुर की लड़ाई में श्री गुरू हरिगोबिंद साहिब जी ने देख कर आपको 'तेग बहादर' का खिताब दिया। इसके बाद गुरू जी का नाम ही 'तेग बहादर' पड़ गया।

श्री गुरू हरिगोबिंद साहिब जी के ज्योति-जोत समा जाने के बाद श्री गुरू हरिराय साहिब जी को गुरगद्दी दी गई। गुरू जी ने इसका कोई भी विरोध नहीं किया। गुरू जी माता नानकी जी के साथ बकाले आकर रहे, जहां पर आप जी ने लगभग २० साल तक गुरबाणी का अध्ययन तथा तत्कालीन समय पर चिंतन किया। इससे आपके व्यक्तित्व में और निखार आया। श्री गुरू हरिक्रिशन जी ने गुरगद्दी के उत्तराधिकारी के रूप में बाबा बकाला कहकर नौंवें गुरू होना कर संकेत दिया। मक्खन शाह लुबाणा द्वारा अन्य पाखंडी गुरुओं में असली गुरू की पहचान कर नौंवे गुरू के रूप में श्री गुरू तेग बहादर साहिब के गुरू होने का ऐलान किया। श्री गुरू तेग बहादर साहिब जी द्वारा जो बाणी रची गयी, वह श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी ने श्री गुरू ग्रंथ साहिब में संकलित करवाई। आप जी के द्वारा रची गयी बाणी का मुख्य उद्देश्य मनुष्य-मात्र को पदार्थवादी दौड़-धूप से बचने तथा संतोष एवं धैर्य से जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित करना है। दुख-सुख जीवन का अटूट अंग हैं। इन दोनों में मनुष्य को समतोल बनाए रखने के लिए गुरू जी पावन बाणी में

(शेष पृष्ठ २४ पर)

सामाजिक समता और नवम गुरू जी का अविस्मरणीय बलिदान

*-श्री सुरेन्द्र कुमार अग्रवाल**

'पहले पंगत पाछै संगत' की परम्परा चलाकर, भूखे को साथ बिठाकर भोजन देना, सामाजिक समरसता की गंगा बहाने वाले, नीच और दलितों को गले लगाने वाले श्री गुरू नानक देव जी हैं। जब मुस्लिम आक्रांताओं ने हिंदोस्तान के निमाणे हिंदोस्तानियों पर आक्रमण किया तब उन्होंने उन आक्रांताओं के विरुद्ध आवाज उठाई। सिखों का इतिहास त्याग और बलिदान का इतिहास है। इसकी नींव श्री गुरू नानक देव जी ने रखी।

१५वीं शताब्दी में धर्म और जाति के आधार पर व्याप्त भेदभाव के खिलाफ जो संघर्ष प्रारंभ हुआ, वह भक्ति आंदोलन था। इस आंदोलन के ज़्यादातर नेता उन्हीं जातियों और वर्गों से आये थे जो हिन्दू धर्म की भेदभाव वाली सामाजिक व्यवस्था से परेशान थे। भक्ति आंदोलन के सभी मुखिया समाज-सुधारक थे। वे जनता के बीच सेवा और जागृति का कार्य करते हुये भी अपनी आजीविका के लिये कठोर संघर्ष करते थे। भक्त कबीर जी कपड़ा बुनते थे, भक्त रविदास जी जूते बनाते थे। भक्त धर्मदास उस समय अछूत समझे जाने वाले जाट किसान थे। भक्त दादू एक नीची जाति के बुनकर थे। बंगाल के महान संत भक्त चैतन्य जी एक गरीब परिवार में जन्मे थे। आंध्र के कवि बेमन्ना जी एक निरक्षर किसान थे। भक्ति आंदोलन और सिख जन-जागरण लहर का नेतृत्व कहीं भी ब्राह्मण, पुरोहितों व उच्च वर्ण वालों ने नहीं किया।

धार्मिक एकता, ईश्वर के सामने सब समान हैं, जाति प्रथा का विरोध, जाति, धर्म और वर्ग से ऊपर उठकर सद्गुणों का सम्मान करना, झूठे कर्मकाण्डों, तीर्थाटनों और पूजा-व्रत का विरोध आदि भक्ति आंदोलन तथा गुरमति जन-जागरण लहर का स्वर था, जिसका जनता पर व्यापक प्रभाव पड़ा। छोटे-छोटे समझे जाने वाले लोग बड़े-बड़े संत, ज्ञानी धार्मिक और सामाजिक नेता बनकर उभरे।

भक्ति आंदोलन और गुरमति जन-जागरण लहर ने अंधविश्वासों और जाति-प्रथा पर आधारित भेदभावों के खिलाफ एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। श्री गुरू नानक देव जी ने निर्भीकता से कहा—नीची जातियों में जो सबसे नीची जाति के हैं मैं उनके साथ हूँ। जो नीचों और कमजोरों की रक्षा करते हैं, परमात्मा की उन्हें कृपा प्राप्त होती है:

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥
जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस ॥
(पन्ना १५)

श्री गुरू नानक देव जी और उनके बाद गुरगद्दी पर बैठने वाले सभी गुरू साहिबान ने अपने आचरण और व्यवहार से समाज में सामाजिक समानता स्थापित की। सामाजिक

***c/o** अग्रवाल न्यूज एजेन्सी, हटा (दमोह) म. प्र.-४७०७७५*

समता में विश्वास ही सिख धर्म का मुख्य आधार है, जो पंगत और संगत में देखा जा सकता है। गुरू नानक साहिब न केवल सिख धर्म के संस्थापक हैं वरन् गुरू जी अद्भुत क्रांतिकारी और राष्ट्र-निर्माता भी थे, जिन्होंने अपने समय के क्रूर शासन की निन्दा डंके की चोट पर की। उन्होंने कहा, शासक व्याघ्र के समान हिंसक और सामंत कुत्तों के सामन लालची हो गये हैं:

राजे सीह मुकदम कुते ॥ जाइ जगाइन्हि बैठे सुते ॥ चाकर नहदा पाइन्हि घाउ ॥
रतु पितु कुतिहो चटि जाहु ॥ (पन्ना १२८८)

गुरू नानक साहिब के समय ही बाबर ने काबुल से विशाल सेना लेकर हिन्दोस्तान पर हमला किया था। चारों ओर मारकाट से देश की जनता पीड़ित थी। विशेषकर महिलाओं की दुर्दशा बताते हुये श्री गुरू नानक देव जी ने वर्णन किया है कि अत्याचारियों ने सुन्दर स्त्रियों के केश काट डाले और उनको धूल में घसीटा। बाबर को श्री गुरू नानक देव जी ने जालिम व अत्याचारी घोषित किया और उसके शासन को कसाई का शासन कहा। श्री गुरू नानक देव जी ने स्वयं भी चक्की पीसी, जेल यातनायें सहीं, लेकिन जनसाधारण में साहस जगाया। लोगों में अन्याय व अत्याचारों के खिलाफ संघर्ष करने की क्षमता पैदा की। गुरू जी इस अन्यायपूर्ण आक्रमण का वृत्तांत लिखते हैं:

-खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइआ ॥
आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइआ ॥
एती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइआ ॥ (पन्ना ३६०)
-जिन सिरि सोहनि पटीआ मांगी पाइ संधूरु ॥
से सिर काती मुंनीअन्हि गल विचि आवै धूड़ि ॥
महला अंदरि होदीआ हुणि बहणि न मिलन्हि हदूरि ॥ . . .
तिन्ह गलि सिलका पाईआ तुटन्हि मोतसरीआ ॥
धनु जोबनु दुइ वैरी होए जिन्ही रखे रंगु लाइ ॥
दूता नो फुरमाइआ लै चले पति गवाइ ॥
(पन्ना ४१७)

श्री गुरू नानक देव जी की कथनी-करनी में भेद नहीं था। भाई मरदाना जी उनके साथ रहे जो छोटी जाति के डोम मुसलमान थे। गुरू जी भाई लालो जी बढ़ई जैसे साधारण लोगों के घर ठहरते और परशादा छक लेते थे। गुरू जी सभी मानवों को एक समान समझते थे। उन्होंने भाई लालो बढ़ई को ही अपने मत का सबसे पहला प्रचारक नियुक्त किया। उनकी धार्मिक यात्राओं में अधिकतर छोटी जाति के लोग ही उनके साथ रहे। गुरू नानक साहिब ने सामाजिक समता को साकार रूप देने के लिये लंगर (सामूहिक भोजन) की प्रथा प्रारंभ की, जिससे हर कोई बिना किसी जातीय भेदभाव के पंगत में एक साथ बैठकर लंगर छकता था, जो परम्परा आज भी चल रही है।

श्री गुरू नानक देव जी के बाद श्री गुरू अंगद देव जी ने गद्दी संभाली तो राय बलवंड जी कीर्तन करते थे, जो डोम जाति के थे। वे सिख समाज में गुरू के प्रिय पात्र के रूप में सम्मान की दृष्टि से देखे जाते थे। श्री गुरू अमरदास जी के समय सम्राट अकबर पंजाब के दौरे पर आया तो गुरू जी ने उससे इसी शर्त पर मिलना स्वीकार किया कि पहले

पंगत में बैठ कर लंगर छके। अकबर श्री गुरू अमरदास जी के प्रति सच्ची श्रद्धा रखता था। गुरू जी ने अपने परम सिख भाई जेठा जी के द्वारा एक बहुत बड़े सरोवर का निर्माण करके अमृतसर शहर की आधारशिला रखवाई। तब से इस सरोवर में सभी लोग बिना किसी भेदभाव के स्नान करते आ रहे हैं। सिख धर्म में गुरगद्दी मात्र सम्मान का प्रतीक ही नहीं है बल्कि इसमें बहुत बड़ी जिम्मेवारी भी निहित है। सिख गुरुओं ने बड़ा त्याग और महान कुर्बानियां की हैं, कष्ट सहे हैं। श्री गुरू अरजन देव जी को गर्म लोहे के तवी पर बैठाया गया। ऊपर से उनके पावन शीश पर गर्म रेत डाली गई। उन्होंने मानवीय गरिमा, सामाजिक समता और धर्म-रक्षा के लिए यह सब सहते हुए मृत्यु का वरण किया। श्री गुरू अरजन देव जी की शहादत के बाद सिखों ने महसूस किया कि सशस्त्र होना बहुत जरूरी है, अन्याय के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष जरूरी है।

छठे गुरू श्री गुरू हरिगोबिंद साहिब जी ने अपने अनुयाइयों को सशस्त्र संघर्ष के लिये तैयार करना शुरू किया। तत्कालीन शासन के विरुद्ध युद्ध भी किये। उनके सबसे छोटे साहिबजादे श्री त्याग मल्ल ने तलवार चलाने में बड़ी निपुणता का प्रदर्शन किया, अत: उनका नाम 'तेग बहादर' हुआ, जो आगे चल कर नवें गुरू हुये। सातवें गुरू श्री गुरू हरिराय जी के समय २२०० सशस्त्र सैनिकों की टुकड़ी आत्म-रक्षा के लिये सदैव तैयार रहती थी।

नवें गुरू श्री गुरू तेग बहादर जी की अद्वितीय कुर्बानी पर इतिहासकारों ने लिखा है-'सम्राट औरंगजेब ने सैंकड़ों ब्राह्मणों को इस आशा से जेल में डाल दिया कि वे इस्लाम ग्रहण कर लेंगे। तत्कालीन सूबेदार कश्मीर की धमकी को देखते हुये ब्राह्मण अमरनाथ गुफा में शिवजी के स्थान तक गये और अत्याचार से मुक्ति के लिये विचार-विमर्श करते हुये प्रार्थना की। फिर उन्हें आभास हुआ कि हमें श्री गुरू तेग बहादर जी के पास जाना चाहिए। तो ब्राह्मण एक बड़े समूह के रूप में श्री गुरू तेग बहादर जी से मिलने गये।

प्रतिनिधि मुखिया श्री किरपा राम ने श्री गुरू तेग बहादर जी से कहा-'आप मुसीबत में हमारी रक्षा करें।' किरपा राम की बातें सुन श्री गुरू तेग बहादर जी गंभीर हो गये। पास बैठे बाल गोबिंद राय जी जो अभी छोटे थे, उन्होंने अपने पिता जी से रक्षा का उपाय पूछा। श्री गुरू तेग बहादर जी ने कहा-'किसी महान व्यक्ति को अपनी कुर्बानी देनी पड़ेगी।' बाल गोबिंद राय जी ने गुरू-पिता से निर्भीकतापूर्वक कहा-'आप से अधिक महान और कौन होगा?' अपने पुत्र की बात सुनकर श्री गुरू तेग बहादर जी ने अपना शीश देने का निश्चय करते हुये कश्मीरी पंडितों से कहा-'अपने शासक से कहो, यदि गुरू तेग बहादर धर्म-परिवर्तन कर लेते हैं तो हम भी मुसलमान बन जायेंगे।'

गुरू जी को दिल्ली बुलाया गया। उन्होंने अपने वचनों का पालन करते हुये, विभिन्न यातनायें सहते हुये, मृत्यु का वरण किया। गुरू जी को ऐसे लोहे के पिंजरे में रखा गया जहां वे न खड़े हो सकते थे और न लेट सकते थे। गुरू जी के सामने उनके प्रिय शिष्य भाई मतीदास को आरे से चीरा गया। दूसरे शिष्य भाई दयाल दास को खौलते कड़ाहे में डाला गया। तमाम दबाव और

यातनाओं के बाद जब गुरू जी ने शीश नहीं झुकाया तो अंत में जल्लाद जलालुद्दीन ने तलवार से उनकी गर्दन पर वार करके उनका शीश उनके शरीर से अलग कर दिया। शाही आतंक के चलते किसी की हिम्मत नहीं हो रही थी कि गुरू जी का शीश और शरीर उठा ले। लेकिन ऐसे समय में एक लुबाणा सिख भाई लखी शाह पहरेदारों से नज़र बचाकर श्री गुरू तेग बहादर जी के शीश रहित शरीर को एक छकड़े में लादकर अपनी झोपड़ी में ले गया और झोपड़ी को ही आग लगा दी। गुरू जी के शीश रहित शरीर के साथ-साथ झोपड़े में रखा सारा सामान जल गया। झोपड़ी में आग इसलिये लगाई ताकि शासकों को कोई संदेह न हो। वहीं पर आज 'गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब' सुशोभित है। भाई जैता जी जो उस समय सफाई करने वाले थे, उन्होंने गुरू जी के शीश को तीव्र गति से आनंदपुर साहिब पहुंचाया और श्री गुरू गोबिंद राय जी के सामने प्रस्तुत किया। जहां पर श्री गुरू तेग बहादर जी का बलिदान हुआ था वहीं पर चांदनी चौक में 'शीशगंज गुरुद्वारा' सुशोभित है।

श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी ने समाज के दबे-कुचले लोगों के हृदयों से हीन भावना निकाली और स्वाभिमानपूर्ण जिंदगी जीने के लिये प्रेरित किया। जब संवत् १७५६ (सन् १६९९) में वैशाखी के दिन उन्होंने आनंदपुर साहिब में पांच सिरों की मांग की तो पांच सिरों को देने वाले पांच प्यारों में लाहौर निवासी खत्री भाई दयाराम जी, हस्तिनापुर निवासी जाट भाई धर्मदास जी, द्वारिका निवासी छींबा भाई मुहकम चंद जी, बिदर निवासी नाई भाई साहिब चंद जी तथा जगननाथपुरी निवासी झीवर भाई हिम्मत राय जी थे। गुरू जी कहते थे मैं तो छोटी जातियों और दलितों के उद्धार के लिये ही जगत में आया हूँ। उन्होंने उपेक्षित वर्ग को इतना जुझारू बना दिया कि वे शासकों और अपने को श्रेष्ठ मानने वालों को रौंद कर आगे बढ़ सकें। इन्होंने आगे चलकर सशस्त्र खालसा पंथ की स्थापना की।

समाज के अति निम्न वर्गों के लोग जो गुलामों जैसी जिंदगी जीते थे, जिन्होंने कभी हाथ में तलवार नहीं ली थी वे श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी के प्रेरक नेतृत्व में अति बहादुर योद्धा बने और उन्होंने समाज में सम्मान प्राप्त किया। यह धर्म एक सशस्त्र क्रांति का संदेश-वाहक है। इस धर्म का उदय उस समय हुआ जब तलवार की नोक पर आम आदमी के आत्म-सम्मान को रौंदा जा रहा था। सिख पंथ में सामाजिक समता के आधार पर गठित एक जीवन-व्यवस्था है। सामाजिक समता में विश्वास ही सिख गुरू साहिबान का आदर्श है।

इससे पूर्व छोटे तबके के लोग शस्त्र धारण नहीं कर सकते थे। यह कार्य क्षत्रियों के लिये सुरक्षित था। हमलावरों के विरोध में छोटे तबके का सहयोग न मिलना भारत के गुलाम बनने का एक मुख्य कारण था। शूद्रों को दोहरी मार सहनी पड़ती थी- एक उच्च वर्गीय लोगों की तथा दूसरी शासकों की। श्री गुरू नानक देव जी का जन्म सन् १४६९ में हुआ। गुरू जी के समय बाबर ने भारत पर हमला किया था। लोगों की दुर्दशा देखकर गुरू नानक साहिब का हृदय द्रवित हुआ।

(शेष पृष्ठ २४ पर)

हिन्द की चादर श्री गुरू तेग बहादर जी

-श्री प्रवीन ग्रोवर

श्री गुरू नानक देव जी की इलाही ज्योति के आलोक में नौवें गुरू श्री गुरू तेग बहादर साहिब जी ने भारतीय संस्कृति को नया संदेश दिया। श्री गुरू तेग बहादर साहिब जी ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए अपना शीश कुर्बान कर दिया। वे सही अर्थों में मानव जाति के रक्षक थे। वे धार्मिक स्वतंत्रता को मानव जाति का प्रथम धर्म मानते थे। इसी वजह से जब कश्मीरी पंडितों का एक दल गुरू साहिब के सामने अपनी फरियाद लेकर आया, जिसका नेतृत्व किरपा राम दत्त (जो बाद में भाई किरपा सिंघ बने) कर रहे थे। उन्होंने गुरू साहिब को बताया कि मुगल बादशाह औरंगजेब उन पर अत्याचार करके उन्हें जबरदस्ती मुसलमान बनाना चाहता है और कोई भी उनकी सहायता नहीं कर रहा है। उन्होंने कहा कि उन्हें सिर्फ गुरू नानक साहिब के घर से उम्मीद है तो श्री गुरू तेग बहादर साहिब ने उन्हें धैर्य दिलाया और कहा कि वाहिगुरू तुम्हारी मदद करेगा। उन लोगों की जान व धर्म की रक्षा के लिए गुरू साहिब कुर्बानी देने को तैयार हो गए।

तिलक जंञू राखा प्रभ ता का ॥
कीनो बडो कलू महि साका ॥
साधन हेति इती जिनि करी ॥
सीसु दीआ पर सी न उचरी ॥३॥

(बचित्र नाटक, पा: १०)

यहां पर एक बात विचारयोग्य है कि तिलक व जनेऊ दोनों का ही श्री गुरू नानक देव जी ने बहिष्कार किया है परंतु नवम पातशाह श्री गुरू तेग बहादर साहिब जी ने उसी तिलक व जनेऊ की रक्षा के लिए स्वयं अपना जीवन तक हंसते-हंसते न्यौछावर कर दिया और सी भी नहीं की। इसका कारण है कि श्री गुरू नानक देव जी द्वारा बख्शिश किया गया गुरमति सिद्धांत ही था जिसके आधार पर नवम पातशाह का कहना था कि सभी मनुष्यों को धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए। सभी धर्म अपने-अपने स्थान पर ठीक हैं परंतु किसी को भी जबरदस्ती व अत्याचार करके उसका धर्म छुड़ाकर, डराकर दूसरा धर्म ग्रहण नहीं कराना चाहिए। उनका सिद्धांत था–'*जीओ और जीने दो।*' उन्होंने कहा है:

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥

(पन्ना १४२७)

यहां पर मैं एक विषय पर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि क्या आज के भारतवर्ष में हम नवम पातशाह द्वारा दी गई कुर्बानी के भाव को स्मर्ण रखने में सक्षम हैं? जिन कश्मीरियों के लिए गुरू साहिब ने चाँदनी चौक, दिल्ली में अपना शीश तक न्यौछावर कर दिया वे आज भी अपने कश्मीर से बाहर हैं तथा अपना घर-बार सब कुछ छोड़कर अपनी जान, इज्जत, धर्म की रक्षा के लिए आज भी अपना जीवन-यापन 'रिफ्यूजी कैंपों' में कर रहे हैं। सोचने की बात है कि जिन लोगों के लिए हमारे गुरू ने आत्म-

बलिदान किया वे लोग आज भी अपने जीवन की रक्षा के लिए मारे-मारे फिर रहे हैं, कोई उनकी सुध लेने वाला नहीं है। वे पूर्ण रूप से निराश हो चुके हैं। इस समय में हमारा फर्ज बनता है कि हम गुरू-घर के सेवक अपने गुरू साहिब की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए उन लोगों की सहायता के लिए हर संभव प्रयास करें तथा अपने देश की सरकार, राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री से आग्रह करें कि जिन कश्मीरियों के लिए हमारे गुरू ने कुर्बानी दी वे आज भी हताश हैं। उनकी समस्या का समाधान किया जाए तथा उनका घर-बार जो उनसे छिन गया है, वो उन्हें वापस दिलाया जाये जिससे देश में शांति का माहौल कायम हो सके। इस प्रकार हम हरेक युग में गुरू साहिब जी द्वारा दी गई कुर्बानी का सदका मानवतावाद, भ्रातृभाव और प्यार व एकता को मजबूत कर सकते हैं। श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी के ये पावन बोल रहती दुनिया तक गूंजते रहेंगे:

तेग बहादर के चलत भयो जगत को सोक ॥
है है है सभ जग भयो जै जै जै सुर लोक ॥१६॥
(बचित्र नाटक)

■

श्री गुरू तेग बहादर जी की . . . (पृष्ठ १८ का शेष)

फरमान करते हैं:

जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥
सुख सनेहु अरु भै नही जा कै
कंचन माटी मानै ॥ *(पन्ना ६३३)*

आप जी ने श्री गुरू नानक साहिब जी द्वारा चलाये गये धर्म के प्रचार के लिए पंजाब से बाहर भी यात्रा की, जैसे कि प्रयाग, बुद्ध गया, मोपीर मालदा, ढाका तथा धुब्री आदि। गुरू साहिब जी ने लोगों को तंगदिली तथा धर्म व जाति के बंधन से ऊँचा उठने के लिए कहा और साथ ही साथ संगत तथा पंगत का प्रचार भी किया।

गुरू जी का समूचा जीवन ही लासानी है। आप जी द्वारा दुखी मानवता के बचाव तथा कल्याण हेतु की गई कुर्बानी एक अद्वितीय उदाहरण है। इस कुर्बानी ने आने वाले सिख इतिहास की रूप-रेखा को निर्धारित किया। यह कुर्बानी विश्व के इतिहास में अद्वितीय कुर्बानी है।

■

सामाजिक समता और नवम गुरू . . . (पृष्ठ २२ का शेष)

उनके हृदय में सामाजिक विषमता के विरुद्ध आक्रोश पैदा हुआ। सामाजिक समता एवं धर्म की आजादी के लिये सिखों ने बहुत त्याग और बलिदान किया है। छोटे लोगों को अपने अधिकारों के लिये लड़ना सिखाया। जिन्होंने भी सामाजिक समता का कदम उठाया, समाज के पिछड़ों को साथ लिया, सच्चे अर्थों में वे ही सफल हुये हैं। शिवाजी ने निर्धनों, दलितों और खेतीबाड़ी से अपनी जीविका चलाने वालों के सहयोग से महाराष्ट्र में स्वतंत्र राज्य कायम किया और जालिम मुगल शासन की नींव हिला दी। सिखों ने भी विशाल पंजाब में अपना आधार बनाकर महान सफलता प्राप्त की है। अगर हिन्दू राजा भी समाज के सभी तबके को साथ लेकर चले होते तो वे कभी पराजित न हो पाते। भारत पर सदियों तक विदेशी आक्रमण होते रहे हैं। अगर वे समाज की जड़ता को तोड़कर सारे समाज को एक समान बनाने का प्रयत्न करते तो शायद भारत को विदेशी हमलों की विभीषिका और गुलामी के दिन न देखने पड़ते।

■

भक्त नामदेव जी की बाणी में नाम की महिमा

-डॉ. अनीता शर्मा*

इस संसार में मनुष्य ही नहीं बल्कि हर प्राणी सुख अथवा आनंद की कामना करता है और निरंतर उसी की खोज में भटकता रहता है। यह उसकी जन्मजात प्रवृत्ति है। मूल रूप में मनुष्य आनंद का ही एक अंश है। 'समस्त जड़-चेतन जगत परमात्मा से निर्मित है, परमात्मा से ही अनुप्राणित है। परमात्मा रस-स्वरूप है, आनंदमय है। रसमय परमात्मा को पाकर ही मनुष्य आनंदयुक्त होता है।'[१] अत: मनुष्य का अपने मूल स्वरूप अर्थात् परमात्मा की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। हमारे ऋषियों-मुनियों ने परमात्मा की प्राप्ति के लिए तीन साधन बताए हैं- ज्ञान, कर्म और भक्ति। भक्ति के विषय में नारदमुनि का कथन है- 'भगवान सें अनन्य प्रेम हो जाना भक्ति है। भक्ति अमृत का ही एक रूप है। भक्ति-रस के अमृत को प्राप्त करके मनुष्य अमर हो जाता है।'[२]

भक्त नामदेव जी का जन्म भक्ति की अमृतधारा को प्रवाहित करने के लिए ही हुआ था। वे एक आदर्श महामानव थे जिन्होंने अपनी अनन्य निष्ठा और साधना से ईश्वर-भक्ति का मार्ग प्रशस्त किया। भक्त कबीर जी से १३० वर्ष पूर्व १२७० ई में नरसी बामनी, जिला हिंगोली (महाराष्ट्र) में दामाशेठ दर्जी के घर जन्म लेने वाले भक्त नामदेव जी जीवन के प्रथम चरण में मूर्ति-पूजा में दृढ़ विश्वास रखते थे, किन्तु वृद्ध कोढ़ी के शिवलिंग पर रखे हुए पैरों को हटाते हुए उनकी चेतना जागृत हुई। कोढ़ी विनोबा खेचर के रूप में उन्हें सद्गुरु की प्राप्ति हुई और उन्हीं की प्रेरणा से उन्हें परमेश्वर के सर्वव्यापक रूप का ज्ञान हुआ। इस संबंध में डॉ. निकोल मेकनिकॉल लिखते हैं-'नामदेव के जीवन में एक बात उनके धार्मिक विचारों में परिवर्तन और विकास की है, जो कि उनके अभंग स्पष्ट बताते हैं।'[३] परमेश्वर को अंतरात्मा में अनुभव करने के बाद भक्त नामदेव जी सृष्टि की प्रत्येक वस्तु में उसी शक्ति के दर्शन करने लगे, 'परमात्मा का अनुभव इतना पूर्ण होता गया कि उन्हें सोहं अर्थात् मैं वही परमेश्वर हूँ और परमेश्वर मुझ में है, ऐसा साक्षात्कार होने लगा।'[४]

भक्त नामदेव जी का सम्पूर्ण जीवन मानव-कल्याण के लिए समर्पित रहा। इस कल्याण-यात्रा का आरम्भ उन्होंने अपने गुरू विनोबा खेचर के मार्गदर्शन और संत ज्ञानेश्वर के सहयोग से किया। २७ वर्ष की आयु में मानवता का संदेश देश के कोने-कोने में फैलाने के लिए वे अकेले ही निकल पड़े और २५ वर्ष तक पैदल ही भारत के विभिन्न प्रदेशों में यात्रा करते रहे। अंतत: पंजाब के गुरदासपुर जिले में 'घुमाण' नामक स्थान को उन्होंने अपनी कर्मभूमि बनाया।

भक्त नामदेव जी भक्ति-मार्ग के आद्य

*प्रवक्ता, जनता कॉलेज, करतारपुर (जालंधर)।

साधक माने जाते हैं। मूर्ति-पूजा, कर्मकाण्ड, जात-पात के विषय में इनके स्पष्ट विचारों के कारण हिन्दी के विद्वानों ने इन्हें भक्त कबीर जी का आध्यात्मिक अग्रज माना है। सर्वप्रथम भक्त नामदेव जी ने ही 'राम' शब्द का प्रयोग निर्गुण ईश्वर के लिए किया था, जैसे कि:

नामे के सुआमी लाहि ले झगरा ॥
राम रसाइन पीओ रे दगरा ॥ (पन्ना ४८५-८६)

यह स्मर्णीय है कि श्री गुरू नानक देव जी, भक्त कबीर जी, भक्त दादू जी, भक्त पलटू जी आदि भक्त साहिबान ने राम, हरि, मुरारि, गोबिंद आदि शब्दों को सर्वव्यापक ईश्वर के अर्थ में प्रयुक्त किया है।

भक्त नामदेव जी के प्रभु घट-घट व्यापी हैं। सृष्टि के प्रत्येक कण में उनका अस्तित्व है। भक्त नामदेव जी कहते हैं कि परमात्मा के पास या दूर होने की बात वही करते हैं जिन्होंने उसे जाना ही नहीं है। यह बात उसी तरह व्यर्थ है जैसे यह कहा जाए कि मछली खजूर के झाड़ पर चढ़कर खजूर खा रही है:

कोई बोलै निरवा कोई बोलै दूरि ॥
जल की माछुली चरै खजूरि ॥ (पन्ना ७१८)

वास्तविकता तो यह है कि ईश्वर का नाम 'अन्धे की लाठी' है, जीवन का आधार है:

मै अंधुले की टेक तेरा नामु खुंदकारा ॥
मै गरीब मै मसकीन तेरा नामु है अधारा ॥
(पन्ना ७२७)

गोबिंद का सुमिरन ही भवसागर से मुक्ति का सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। तीर्थ-यात्रा, हठयोग, अश्वमेध यज्ञ, इन्द्रिय-दमन और द्वैत-अद्वैत के विवाद से लक्ष्य की प्राप्ति संभव नहीं हो सकती। इसकी सिद्धि के लिए वैसी ही तड़प होनी चाहिए जैसी भूखे व्यक्ति के मन में भोजन के प्रति और प्यासे के मन में जल के प्रति होती है:

जैसी भूखे प्रीति अनाज ॥
त्रिखावंत जल सेती काज ॥
जैसी मूड़ कुटंब पराइण ॥
ऐसी नामे प्रीति नराइण ॥१॥
नामे प्रीति नाराइण लागी ॥
सहज सुभाइ भइओ बैरागी ॥१॥रहाउ॥
जैसी पर पुरखा रत नारी ॥
लोभी नरु धन का हितकारी ॥
कामी पुरख कामनी पिआरी ॥
ऐसी नामे प्रीति मुरारी ॥२॥
साई प्रीति जि आपे लाए ॥
गुर परसादी दुबिधा जाए ॥
कबहु न तूटसि रहिआ समाइ ॥
नामे चितु लाइआ सचि नाइ ॥ (पन्ना ११६४)

श्री गुरू ग्रंथ साहिब में संकलित एक पावन शब्द के अनुसार नाम की विलक्षण शक्ति पारस की भान्ति लोहे को भी सोने में परिवर्तित करने की क्षमता रखती है। यह वह हीरा है जो दरिद्रता का विनाश कर देता है; वह शस्त्र है जो यम की फांसी से छुड़ाने में समर्थ है। अत: जीवन में परम आनंद की प्राप्ति के लिए परमेश्वर के नाम का आश्रय ग्रहण करने की प्रेरणा देते हुए भक्त नामदेव जी कहते हैं कि हरि-नाम ऐसा हीरा है जो पास होने से सभी दुख स्वत: मिट जाते हैं, बुराइयां दूर हो जाती हैं तथा यम की फांसी तक भी कट जाती है:

मनु मेरो गजु जिहबा मेरी काती ॥
मपि मपि काटउ जम की फासी ॥
कहा करउ जाती कह करउ पाती ॥
राम को नामु जपउ दिन राती ॥ (पन्ना ४८५)

भक्त नामदेव जी ने उन सभी सांसारिक व्यापारों, जो मनुष्य को ईश्वर से विमुख करते हैं, को धिक्कारा है। उन्होंने वेद-शास्त्रों के अर्थहीन पठन-पाठन का विरोध करते हुए मन की निर्मलता को प्रभु-भक्ति के लिए अनिवार्य माना है। आत्मा की शुद्धि के लिए कर्मों की शुद्धि आवश्यक है और ऐसा न होने की स्थिति में सारे क्रिया-कलाप केवल ढोंग मात्र बनकर रह जाते हैं। समाज का मार्गदर्शन करने के लिए भक्त कबीर जी ने जो विचारधारा अपनाई, उसका बीज भक्त नामदेव जी की बाणी में भी सहज ही दिखाई देता है। वाह्याडम्बरों का खंडन, निर्गुण ईश्वर में आस्था, गुरू की महत्ता, नाम-सुमिरन, मन, कर्म एवं वचन की पवित्रता, अद्वैतवादी विचारधारा, सहज भक्ति एवं ईश्वर के प्रति प्रेम का भाव वे मुख्य बिंदु हैं जो परवर्ती संतों-भक्तों की बाणी में सहज रूप से समाहित हो गए हैं। ईश्वर के प्रति प्रेमिका भाव से युक्त निम्न पद की भावुकता निश्चय ही मोहित कर लेती है:

मै बउरी मेरा रामु भतारु ॥
रचि रचि ता कउ करउ सिंगारु ॥१॥
भले निंदउ भले निंदउ भले निंदउ लोगु ॥
तनु मनु राम पिआरे जोगु ॥१॥रहाउ॥
बादु बिबादु काहू सिउ न कीजै ॥
रसना राम रसाइनु पीजै ॥२॥
अब जीअ जानि ऐसी बनि आई ॥
मिलउ गुपाल नीसानु बजाई ॥३॥
उसतति निंदा करै नरु कोई ॥
नामे स्रीरंगु भेटल सोई ॥४॥ *(पन्ना ११६४)*

यह आनंद की अवस्था में हृदय से फूट कर निकला प्रेम है। भक्त रूपी प्रेमिका अपने परमेश्वर पति के प्रेम में इतनी मुग्ध हो चुकी है कि उसे निन्दा, स्तुति की कोई चिंता नहीं रही।

साधक को नाम की महिमा का ज्ञान तभी होता है जब उसे सद्गुरु का आशीर्वाद प्राप्त हो। सद्गुरु की महिमा अपार है, इसे शब्दों में व्यक्त करना संभव नहीं है। गुरू साक्षात प्रभु-मिलाप की सीढ़ी है, प्रेरणा का स्रोत और सुख का सागर है। भक्त नामदेव जी ने अपने गुरू विनोबा खेचर जी को 'माँ' कहकर सम्बोधित किया है। उन्हीं से उन्हें आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त हुए हैं-*'नामा म्हाणे माझे सर्वही साधन-खेचर चरण न विंसबे'।*[५] कहकर भक्त नामदेव जी प्रण करते हैं कि जिस सद्गुरु के मार्गदर्शन से मुझे सब सुख-साधन मिल गए, मैं उनके चरण नहीं छोड़ूंगा।

गुरू-कृपा के समान ही उनकी बाणी में सतसंग की महत्ता का भी उल्लेख मिलता है। सतसंग की उपमा उन्होंने 'चंदन' के साथ की है, जो निम्न कोटि की वनस्पतियों को भी सुगंधित कर देता है। भक्त नामदेव जी कहते हैं कि हे परमेश्वर! हे पिता! मैं आपसे और कुछ नहीं मांगता। मुझे संतों की संगति दो।[६]

वास्तव में भक्त नामदेव जी की बाणी अमृत का वह निरंतर बहता हुआ झरना है, जिसमें सम्पूर्ण मानवता को पवित्रता प्रदान करने का सामर्थ्य है। उन्होंने बाणी के महात्म्य से परिचित करवाकर मानव मात्र को एक जैसा अमोघ अस्त्र सौंप दिया है जिससे संसार में विकार पैदा करने वाले सभी दुखों का विनाश संभव है। काम, क्रोध, मोह, अहंकार आदि त्यागकर किया गया नाम-सुमिरन न केवल भवसागर से पार लगाकर जन्म-मृत्यु के बंधनों से मुक्ति दिलाता है,

(शेष पृष्ठ ३९ पर)

मनि जीतै जगु जीतु

*-स. बलविंदर सिंघ गंभीर**

जज़्बातों के समूह, संकल्पों-विकल्पों के केंद्र, संस्कारों के भंडार और अनेकों संवेदनाओं के अनुभवकर्ता मन पर विजय पाना अत्यंत आवश्यक है। जीता हुआ अथवा वश में किया गया मन मनुष्य-जीवन में बहुत कुछ सकारात्मक करने की क्षमता रखता है। मानव मन में सृजन-शक्ति होती है जो विकास की प्रकिया को आगे की ओर गतिमान करती है। यह तभी संभव है यदि मानव-मन काबू में हो। मन पर विजय प्राप्त करने के लिए मन का साधक होना अत्यंत आवश्यक है। सत्य की पहचान, आत्म-परख, हउमै का परित्याग, प्रभु-सुमिरन आदि मन को वश में करने की युक्तियां हैं। बेकाबू मन कई प्रकार की समस्याएं या रुकावटें खड़ी करता हुआ विनाशकारी हो जाता है। ऐसा मन कुंचर (हाथी) के समान होता है जो अपनी नासमझी वाली प्रकृति के कारण मलीनता का प्रेमी होता है। हाथी को जितना चाहे नहला-धुला कर और सौगंधियां आदि लगाकर संवारा-शृंगारा जाए वह जहां कीचड़ देखेगा वहीं ढेरी हो जाएगा। मूल से थिड़का/भटका हुआ मन बेकाबू होता है और अपने टिकाव का मुकाम गंवा चुका होता है। मानव समाज में व्याप्त विभाजन, बलवे, चोरी, ठगी, धोखा-फरेब, बलात्कार, स्वार्थ, नफ़रत, बेईमानी आदि सभी बुराइयां ऐसे बेकाबू और रोगी मन की ही पैदावार हैं। आत्मिक, नैतिक और सामाजिक कीमतों अथवा मूल्यों की भव्य तोड़फोड़ और विनाश भी ऐसे ही मन का काम है। जैसे बेकाबू हाथी, शेर, चीते आदि विनाश मचा देते हैं, यूं ही बेकाबू मन विनाश का कारण बनता है। बेकाबू मन के लिए गुरबाणी में जगह-जगह कुंचर, सांप, करहला, पक्षी, अंधकूप, बैल आदि शब्द प्रयोग किये गए मिलते हैं।

आज बेकाबू मन वाले मनुष्यों का मानव समाज में ज़ोर दृष्टमान होता है। यह वस्तु-स्थिति जहां अपने आप में अत्यंत चिंताजनक है वहां यह मूल के साथ जुड़ने के लिए प्रयत्नशील मन के धारक मनुष्य को भी निराशा के प्रभाव में रहने पर विवश कर रही है। मन को जीतने के लिए आत्म-स्वरूप को जान-समझ कर अपने अस्तित्व को उस गुणी-निधान परमात्मा की रज़ा में चलाना आवश्यक है। 'सच' के साथ समायोजित मन हउमै और विषय-विकारों से रहित होता है। वह स्वार्थी नहीं होता बल्कि परोपकारी स्वभाव का स्वामी होता है। वह समस्त कायनात को प्यार करता है। ऐसा मन विगास में रहता है। इसी लिए श्री गुरू अमरदास जी मन को अपने आत्म-स्वरूप की पहचान करने हेतु प्रेरणा दे रहे हैं:

**गांव-तारागढ़, डाक-धर्मकोट बग्गा, तहसील-बटाला (गुरदासपुर) मो. ९९७२११८८४६*

मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥
मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु ॥
(पत्रा ४४१)

बेकाबू हुए पशु को मोटी रस्सियों और डंडे के साथ काबू कर लिया जाता है। बेकाबू हुए मन को ज्ञान के साथ ही वश में किया जा सकता है। वर्षा का जल एकत्र करना हो तो तलाब या किसी पात्र की आवश्यकता पड़ती है। पवित्र फरमान है कि जल कुंभ के बिना रह नहीं सकता, जल के बिना कुंभ नहीं होता। मन ज्ञान द्वारा ही बंधा रहता है और गुरू के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता:

कुंभे बधा जलु रहै जल बिनु कुंभु न होइ ॥
गिआन का बधा मनु रहै गुर बिनु गिआनु न होइ ॥ (पत्रा ४६९)

गुरू नानक साहिब जी के साथ गोष्ठि के समय निज-पंथ की श्रेष्ठता की घोषणा करते हुए सिद्ध कहते हैं कि मुंदरा, झोली और खिंथा आदि 'आई पंथ' योगियों के वेश को धारण करने से मन सीधे रास्ते पर आ जाता है और इसे जीता जा सकता है परंतु गुरू साहिब बतला रहे हैं कि मन बाहरी वेश के कारण सीधे रास्ते पर कदापि नहीं आ सकता। बाहरी वेश तो अपने आप में एक भटकाव ही होता है। यह झूठी संतुष्टि से प्रेरित होता है। अत: सिद्धों को संबोधित होते हुए गुरू साहिब संतोष को मुंदरा बनाने, श्रम को खप्पर व झोली और अकाल पुरख परमात्मा की ध्यान रूपी विभूति रमाने की युक्ति देते हैं। मृत्यु के भय, प्रभु के डर और प्यार व श्रद्धा को डंडा बनाने से ही अंदर से झूठ की दीवार टूट सकती है और मन जीता जा सकता है:

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ॥
खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति ॥
आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥
आदेसु तिसै आदेसु ॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥ (पन्ना ६)

मन को वश में करने के लिए **'शब्द'** पर गहरा चिंतन करते हुए मैं-मेरी, काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आदि को दूर करना बहुत आवश्यक है। परंतु एक बात स्मरण रहे कि गृहस्थ मार्ग धारण करते हुए सृष्टि को आगे चलाने के लिए इन तत्वों का उचित मात्रा में होना गुरमति के विरुद्ध नहीं। गुरू साहिबान ने हमें आदर्श समतोल के बारे में बतलाकर हमारा मार्गदर्शन किया है। वास्तव में इंद्रियों की लालसाओं के पीछे मन की भूख का अन्य बदल ढूंढने की आवश्यकता है और वह सबसे अच्छा बदल है– परमात्मा का नाम। परमात्मा के नाम का संबंध दिव्य गुणों के साथ होने के कारण मन उन गुणों का अनुसरण करने लग जाता है और अवगुणों से हट जाता है। दिव्य गुणों के सहारे टिका हुआ मन सांसारिक कार्यों में लगा हुआ भी इनमें लिपायमान नहीं होता। इस प्रकार वश में किया या जीता हुआ मन सकारात्मक रूप वाली शक्ति का धारक हो जाता है और सात्विक कार्य करता हुआ बड़ी से बड़ी रूहानी और नैतिक मंजिलें सर करता चला जाता है, जैसे कि:

इहु मनु सकती इहु मनु सीउ ॥ इहु मनु पंच

तत को जीउ ॥
इहु मनु ले जउ उनमनि रहै ॥ तउ तीनि लोक की बातै कहै ॥ *(पन्ना ३४२)*

यदि मनुष्य सभी समस्याओं के मूल द्वैत की प्रेरक शक्ति 'हउमै' को सावधानी के साथ त्याग दे और प्रभु के हुक्म को बूझ ले तो मन अपने मूल के साथ अभेद हो सकता है। मन को जीतने के लिए कृषक की तरह उद्यमी होने की आवश्यकता है। जैसे एक परिश्रमी कृषक उद्यम सहित हल जोतता है और पूर्णत: समर्पित होकर एक सुनिश्चित संयम का अनुसरण करते हुए हल के पीछे-पीछे चलता है एवं अत्यंत व्यस्तता वाला संघर्ष भरा जीवन- यापन करता है, उसी प्रकार से मन को मानवी सेवा, गुरू-ज्ञान और प्रभु-सुमिरन में लगाना पड़ता है:

मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु ॥
नामु बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु ॥
भाउ करम करि जंमसी से घर भागठ देखु ॥ . . .
लाइ चितु करि चाकरी मंनि नामु करि कंमु ॥
बंनु बदीआ करि धावणी ता को आखै धंनु ॥
नानक वेखै नदरि करि चड़ै चवगण वंनु ॥
(पन्ना ५९५)

वश में किया गया मन सदैव चढ़ती कला में रहता है और बुलंदियों को छूता हुआ आगे बढ़ता चला जाता है। सिख इतिहास पर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होता है कि दस गुरू साहिबान के अतिरिक्त माता गुजरी जी, चार साहिबज़ादे, भाई मनी सिंघ जी, भाई जैता जी, भाई तारू सिंघ जी और बाबा बंदा सिंघ बहादुर तथा अन्य भी अनेकों ऐसी उदाहरणें मिलती हैं जो मन की चढ़ती कला की प्रतीक हैं। संक्षिप्त में कहें तो सिख समुदाय ही चढ़ती कला में विचरण करता चला आ रहा है। एक बात और कि चढ़ती कला में रहने वाला तथा वश किया गया मन ही सदीवी हो निपटता है और लोगों के मनों, रूहों पर राज्य करता है। यहां पात्र जी की यह काव्य उक्ति विचारने योग्य है:

रेत 'ते बाबर दा सी, रूहां 'ते उहदा राज सी,
आखदा सी जिहड़ा, छेड़ मरदानिआ रबाब ।

परंतु अफ़सोस! आज हम अपने रास्ते से कुछ भटके दिखाई दे रहे हैं जो कि ढहती/गिरती कला और बेकाबू मन के चिन्ह हैं। नशे, नंगेज़, भ्रूण-हत्या, दहेज जैसी कई बुराइयों ने औरों के साथ-साथ सिख कहलवाने वालों को भी अपनी लपेट में लिया हुआ है। आवश्यकता है विचार करने की और जीवन रूपी भत्थे में सत्य, संतोष, विचार, नम्रता और सुमिरन के तीर लेकर गुरू के बतलाये हुए 'नाम जपने, किरत करने और बांट छकने' के मार्ग पर चलने की।

■

श्री अकाल तख्त साहिब पर प्रत्येक बुधवार और रविवार को दोपहर १२.०० बजे अमृत-संचार होता है। अमृत-अभिलाषी केशी स्नान कर तथा ककार लेकर समय पर पहुंचकर अमृत-पान कर गुरू वाले बनें।

गुरबाणी राग परिचय-७

राग आसा

*-स. कुलदीप सिंघ**

राग आसा में सबद और असटपदियों के बाद छंदों का अनुपम चयन है। छंदों की कुल संख्या ३५ है। गुरू नानक पातशाह के ५, श्री गुरू अमरदास जी के २ तथा श्री गुरू रामदास जी के १४ छंद हैं। इनका संयुक्त रूप से क्रमांक २१ है तथा श्री गुरू अरजन देव जी के १४ छंदों का क्रमांक अलग से दिया गया है।

गुरू नानक पातशाह के प्रथम छंद में अनजान जीवात्मा को तथा पंचम छंद में विषयरत मन-रूपी हिरण को संबोधित किया गया है तथा सत्य स्वरूप प्रभु को स्मरण करने के लिए सुचेत किया गया है। दूसरे छंद में प्रभु में अनुरक्त मन की आनंद दशा का वर्णन है:

अनहदो अनहदु वाजै रुण झुणकारे राम ॥
मेरा मनो मेरा मनु राता लाल पिआरे राम ॥
(पन्ना ४३६)

सत्य सबद की कमाई से निज स्वरूप को पहचान कर गुणों का खजाना पाया जा सकता है। गुरू-शिक्षा के निर्मल स्नान से मन को पांचों गुण (सत्य, संतोष, दया, धर्म और धैर्य) प्राप्त हो जाते हैं। मन की इस आत्मिक अवस्था को अगले छंद का आधार बनाया गया है, जिसकी प्रथम पंक्ति दूसरे छंद की द्वितीय पंक्ति है। तीसरे छंद के अगले पदों में राम सखा में मन मानने, निरमल सत्य का स्मरण करने, आत्मिक ज्ञान का सुरमा डाल कर माया रहित प्रभु में लीन होने का वर्णन है।

श्री गुरू अमरदास जी के द्वितीय छंद में १० पद हैं। पांचवें पद में मन को अपना मूल स्रोत जानने के लिए संबोधित किया गया है। मन का मूल स्रोत परमात्मा है और उसकी ज्योति या चेतना का स्वरूप परमात्मा की ज्योति से साम्य रखता है, इसी को जान कर प्रभु का ज्ञान होगा:

मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥
(पन्ना ४४१)

श्री गुरू रामदास जी के १४ छंद सरस, मधुर और लालित्य पदावली में रचित हैं। जब मनुष्य के हृदय की धरती पर आत्मिक जीवन को देने वाली नाम-जल की धारा धीरे-धीरे बरसती है तो गुरू के समीप रहने वाले गुरमुख को परमात्मा का दर्शन हो जाता है:

झिमि झिमे झिमि झिमि वरसै अंम्रित धारा राम ॥
गुरमुखे गुरमुखि नदरी रामु पिआरा राम ॥
(पन्ना ४४२)

श्री गुरू रामदास जी के आसा राग के घरु ४ में दिये छ: छंदों के २४ पदों को नित्यनेम में आसा की वार की २४ पउड़ियों के साथ कीर्तन किये जाने से श्रोता के मन में प्रेम-रस का संचार होता है। हे भाई! मेरी आंखें आत्मिक जीवन के दाता हरि के नाम-जल से भीग गई हैं, मेरा मन प्रभु के प्रेम-रंग में रंग गया है। परमात्मा ने मेरे मन को कसौटी पर परखा है और यह शुद्ध कंचन बन गया है। मेरा मन प्रभु के प्रेम में गहरे लाल रंग का (आत्माकार वृत्ति का) हो गया है, मेरा मन

**सी-१२७, गुरमति प्रचार केन्द्र, गुरू तेग बहादर नगर, इलाहाबाद।*

और तन प्रेम-रंग में ओत-प्रोत है। दास नानक प्रभु के नाम की कस्तूरी से सुवासित है, उसका सम्पूर्ण जीवन धन्य है:

हरि अंम्रित भिंने लोइणा मनु प्रेमि रतंना राम राजे ॥
मनु रामि कसवटी लाइआ कंचनु सोविंना ॥
गुरमुखि रंगि चलूलिआ मेरा मनु तनो भिंना ॥
जनु नानकु मुसकि झकोलिआ सभु जनमु धनु धंना ॥
(पन्ना ४४८)

इस कड़ी में छठवें छंद का चौथा चरण 'परमात्मा भक्तों के योग और क्षेम का वहन करता है', अपने सार्वजनीन विचार के कारण कीर्तन के प्रत्येक सत्र के अन्त में गाया जाता है:

हरि जुगु जुगु भगत उपाइआ पैज रखदा आइआ राम राजे ॥
हरणाखसु दुसटु हरि मारिआ प्रहलादु तराइआ ॥
अहंकारीआ निंदका पिठि देइ नामदेउ मुखि लाइआ ॥
जन नानक ऐसा हरि सेविआ अंति लए छडाइआ ॥
(पन्ना ४५१)

श्री गुरू अरजन देव जी के १४ छंदों में श्री गुरू रामदास जी के छंदों की गूंज सुनाई देती है। कुछ छंदों के आरम्भ में एक दोहा (सलोकु) भी दिया गया है जिसका भाव-विस्तार छंद में किया गया है।

हे परमात्मा! मेरे विचार शुद्ध हों, मैं सदा गोबिंद का जाप करूं, उत्तम सतसंगति में रहूं। हे देव! कुछ ऐसी कृपा करो कि मुझे घड़ी भर के लिए भी प्रभु-नाम विस्मृत न हो:

सुभ चिंतन गोबिंद रमण निरमल साधू संग ॥
नानक नामु न विसरउ इक घड़ी करि किरपा भगवंत ॥ (पन्ना ४५९)

नाम-सुमिरन संबंधी इस श्लोक का भाव-विस्तार निम्न प्रकार किया गया है:

भिंनी रैनड़ीए चामकनि तारे ॥
जागहि संत जना मेरे राम पिआरे ॥
राम पिआरे सदा जागहि नामु सिमरहि अनदिनो ॥
चरण कमल धिआनु हिरदै प्रभ बिसरु नाही इकु खिनो ॥
तजि मानु मोहु बिकारु मन का कलमला दुख जारे ॥
बिनवंति नानक सदा जागहि हरि दास संत पिआरे ॥ (पन्ना ४५९)

रस से सिक्त रात्रि (मानव जीवन) में तारे (शुभ गुण) चमक रहे हैं, प्रभु के प्यारे जीव जागृत रहकर नाम-सुमिरन करते हैं, उनके हृदय से हरि-चरणों का ध्यान विस्मृत नहीं होता, वे मन का अभिमान, मोह, विकार छोड़कर दुखों का नाश करते हैं। छंद की तृतीय तथा चतुर्थ पंक्तियों में श्लोक में दिये गए भाव की पुष्टि की गई है।

राग आसा में सबद, असटपदी और छंदों के प्रथम भाग के बाद द्वितीय भाग में मूल-मन्त्र के साथ आसा की वार दी गई है। गुरू नानक साहिब जी द्वारा रचित कुल तीन वारें (राग माझ, मलार और आसा) श्री गुरू ग्रंथ साहिब में अंकित हैं। इस वार में सामाजिक, यथार्थ और आध्यात्मिक सन्दर्भों का संतुलन है। इस वार में २४ पउड़ियां हैं। गुरू नानक पातशाह के ४४ श्लोक तथा श्री गुरू अंगद देव जी के १५ श्लोक पउड़ी छंदों के साथ संलग्न हैं।

राग आसा की वार और उसी राग में सम्मिलित भक्त कबीर जी की बाणी को मिलाकर पढ़ने से यह तथ्य उजागर होता है कि दोनों पावन बाणियां समान रूप से मानव धर्म के वास्तविक स्वरूप को प्रस्तुत करती हैं। गुरू नानक पातशाह जी ब्राह्मणों को पाखण्ड छोड़ने को ललकारते हैं। रसोई की लिपाई कर उसके चारों ओर लकीर खींचने से स्वच्छता नहीं होगी

अगर शरीर के अंदर मिथ्या व्यवहार की अपवित्रता है, विषय-वाशनाओं से भ्रष्ट शरीर से बुराई करते हैं और दूषित मन से दान देते हैं। इनको त्याग परम सत्य का ध्यान करो, तभी परम सत्य की प्राप्ति होगी। यदि कोई चोर किसी का घर लूटकर अपने पित्रों का श्राद्ध करेगा तो वह वस्तु परलोक में पहचान ली जाएगी और पित्र भी उस पाप के साझीदार होंगे:

जे मोहाका घरु मुहै घरु मुहि पितरी देइ ॥
अगै वसतु सिञाणीऐ पितरी चोर करेइ ॥
(पन्ना ४७२)

तत्कालीन समाज में व्याप्त साम्प्रदायिकता, अत्याचार, कर्मकांड तथा अहंकार को छोड़ कर दया, संतोष, सत्य और संयम का सूत्र पहनना मानव-कल्याण में सहायक होगा:

दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु ॥
एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु ॥
(पन्ना ४७१)

आध्यात्मिक स्तर पर प्रभु स्थाई सत्य है और जगत परिवर्तनशील है:

किसु नालि कीचै दोसती सभु जगु चलणहारु ॥
(पन्ना ४६८)

परिवर्तनशील का अभिप्राय अस्तित्वहीन होना नहीं है। जिस संसार को प्रभु ने बनाया है उसकी स्थिति आभास मात्र नहीं, व्यवहारिक है। श्री गुरू अंगद देव जी के श्लोक की एक पंक्ति में इसे परिभाषित किया गया है:

इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥
(पन्ना ४६३)

राग आसा में भक्त-बाणी का चयन पूर्ण मन्त्र के बाद विशेष सौष्ठव से किया गया है। भक्त-बाणी में आरम्भ में दिये शीर्षक में भक्त कबीर जी, भक्त नामदेव जी, भक्त रविदास जी का अंकन है किन्तु उक्त के अतिरिक्त भक्त धन्ना जी के दो तथा शेख फरीद जी के दो सबद भी अंकित हैं।

राग आसा में भक्त कबीर जी के ३७ सबद हैं जिनमें भक्त कबीर जी के दार्शनिक चिन्तन का सार-तत्व मुखरित हुआ है। यद्यपि गउड़ी राग में भक्त कबीर जी के सबद आसा राग से अधिक हैं किन्तु भक्त कबीर जी की साधना का तात्विक विवेचन आसा राग में है। इन सबदों का चिंतन गुरू के माध्यम से करने पर अमृत की धारा प्राप्त होना निश्चित है:

हरि का बिलोवना मन का बीचारा ॥
गुर प्रसादि पावै अंम्रित धारा ॥ (पन्ना ४७८)

हरि-नाम के बिलोने का वास्तविक रूप मन को संयमित करना है उसी से गुरू-कृपा के प्रसाद के रूप में अमृत (मक्खन) प्राप्त होगा।

३-४ सबदों में प्रतीकों के माध्यम से रहस्यों को बताया गया है जो सामान्य रूप से विपरीत अर्थ देते प्रतीत होते हैं। कुछ में दार्शनिक सिद्धांत सूत्र रूप में हैं तथा कहीं पर ठेठ भाषा में चेतावनी दी गई है। मृत्यु शरीर रूपी पिंजरे को तोड़ कर पिंजरे में बैठे पक्षी (चटक-पक्षी, चटारा) को ले जाती है तथा खान-पान के सामान यहीं रह जाते हैं। एक पंक्ति में नाशवानता का दृश्य अंकित है:

चिरगट फारि चटारा लै गइओ तरी तागरी छूटी ॥ (पन्ना ४८०)

भक्त कबीर जी ने मसि-कागर (स्याही-कागज) नहीं छुआ। चेतन तत्व (जल) की समुद्र में और घड़े में समानता होना अद्वैत का प्रतिपादन है। जीव और परमेश्वर का संबंध बिम्ब और प्रतिबिंब का है। जब पृथक होने का भ्रम टूटता है तो मन शून्य में समा जाता है:

जिउ प्रतिबिंबु बिंब कउ मिली है उदकु कुंभु बिगराना ॥

कहु कबीर ऐसा गुण भ्रमु भागा तउ मनु सुंनि समानां ॥ *(पन्ना ४७५)*

राग आसा के सबदों में धार्मिक पाखंड, विडंबन तथा कर्मकांड की भर्त्सना प्रभावी ढंग से की गई है। डाली समेट पेड़ को गटकने वाले पंडित बनारस के ठग हैं। जनेऊ और गायत्री जाप बाहरी दिखावा है। भक्त कबीर जी का अधिकार जीवन के वास्तविक मूल्यों पर है, वाह्ययाडंबर पर नहीं:

हम घरि सूतु तनहि नित ताना कंठि जनेऊ तुमारे ॥
तुम्ह तउ बेद पड़हु गाइत्री गोबिंदु रिदै हमारे ॥ *(पन्ना ४८२)*

मानव-सेवा ही सच्ची सेवा है। निर्जीव पाहन की पूजा के लिए पत्ती तोड़ना कहां का न्याय है? मालिन सच्चा मार्ग भूल गई है, सतिगुरू सजीव सजग देव हैं:

ब्रहमु पाती बिसनु डारी फूल संकरदेउ ॥
तीनि देव प्रतखि तोरहि करहि किस की सेउ ॥ *(पन्ना ४७९)*

भक्त कबीर जी के सबदों के बाद भक्त नामदेव जी के पांच सबदों में से पहले सबद में प्रभु के स्वरूप का वर्णन है। प्रभु सर्वव्यापी है जैसे मणियों की माला में सूत्र (धागा) तथा प्रभु, जीव से अलग नहीं है; जैसे जल में लहर या पानी का बुलबुला, दोनों पानी का ही स्वरूप हैं। निराकार प्रभु की पूजा संभव नहीं है, यह दूसरे सबद का विषय है। तीसरे सबद में भक्त नामदेव जी ने प्रभु से अनुराग व्यक्त किया है। चौथे सबद में पाखंडी साधु की तुलना बगुले से की गई है। वह बाहर से संयम दिखाता है तथा अन्दर विष से भरा रहता है। अंतिम सबद में भक्त नामदेव जी भक्ति के मार्ग में जाति को बाधा नहीं मानते तथा बताते हैं कि किस तरह कपड़े पर छपाई करने वाले के घर जन्म लेकर भी उन्होंने प्रभु से भेंट कर ली है।

आसा राग में भक्त रविदास जी के ६ सबद हैं। प्रथम सबद में इन्द्रियों के विषय में आसक्ति होने से विवेक बुद्धि पर प्रभाव का वर्णन है। अन्य प्राणियों में केवल एक इन्द्रिय के विकार से जीव का नाश होता है। दृष्टांत में हिरन (कान-राग सुनना), मीन (जिह्वा का स्वाद), भंवरा (नासिका-सुगंध), पतंगा (नेत्र-रूप) तथा हाथी (काम-वासना) का उदाहरण दिया गया है। विषयों से बचाव प्रभु-कृपा से संभव है।

भक्त धन्ना जी के तीन सबदों में से दो सबद राग आसा में तथा एक सबद राग धनासरी में है। इसी प्रकार भक्त फरीद जी के चार सबदों में दो सबद राग आसा में तथा दो सबद राग सूही में हैं। भक्त धन्ना जी प्रेम-भक्ति का अनुभव कर मुक्त हो जाते हैं और शेख फरीद जी उन दरवेशों के पैर छूते हैं जो खुदा के इश्क में रंगे हैं और जिन्होंने प्रभु को पहचान लिया है। कथन करते हैं, हे दाता! मैं तुम्हारी शरण में हूं, मुझे अपनी बंदगी की भिक्षा दो:

तेरी पनह खुदाइ तू बखसंदगी ॥
सेख फरीदै खैरु दीजै बंदगी ॥ (पन्ना ४८८)

■

अमृत छको,
सिंघ सजो।
किरत करो,
नाम जपो,
वंड छको।

गुरबाणी चिंतनधारा-१४

जापु साहिब की विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

नमसतं अगंजे ॥ नमसतं अभंजे ॥
नमसतं अनामे ॥ नमसतं अठामे ॥४॥

श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी का फरमान है कि हे वाहिगुरू! तुझे इसलिए भी नमस्कार है क्योंकि तू अजित है अर्थात् जिसे सिद्धि के द्वारा भी जीता न जा सके। तुझ पर कोई भी विजय प्राप्त नहीं कर सकता। किसी भी गुण में कोई भी तुझसे आगे नहीं हो सकता। तुझे कोई तोड़ नहीं सकता अर्थात् नष्ट नहीं कर सकता। क्योंकि तुझे किसी ने बनाया ही नहीं तो तोड़ेगा कैसे, नष्ट कैसे करेगा? जो स्वरूप किसी के द्वारा निर्मित ही नहीं हुआ वह नाश कैसे होगा? क्योंकि *'घड़न भंजन समरथ'* अर्थात् सब कुछ बनाने वाला व नष्ट करने वाला तो वह ईश्वर आप ही है। गुरदेव आगे फरमान करते हैं कि हे ईश्वर! न तेरा कोई विशेष नाम है, न विशेष धाम अर्थात् ठिकाना है। जैसे दुनियावी व्यक्ति की पहचान उसके, नाम व निवास के पते, स्थान, ठिकाने आदि से होती है, तेरे साथ तो ऐसा कुछ भी नहीं। तू घट-घट वासी है, तू सर्वव्यापी है, जैसे कि आम धारणा है:

घट-घट में झाँकी भगवान की,
किसी सूझ वाली आँख ने पहचान की।

वह ईश्वर किसी विशेष स्थान पर ही न होकर प्रकृति के कण-कण में विद्यमान है। उसके इस सर्वव्यापी रूप को भी नमन।

नमसतं अकरमं ॥ नमसतं अधरमं ॥
नमसतं अनामं ॥ नमसतं अधामं ॥५॥

हे प्रभु! तुझे इसलिए भी नमस्कार है कि तू कर्मों के बंधन से परे है अर्थात् तू कर्म रहित है। अतः तुझे प्राप्त करने हेतु किसी खास धार्मिक कर्म करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। तू वर्णों-आश्रमों के बन्धनों से भी परे है और तेरा निर्माण पांच भौतिक तत्वों अर्थात् जल, वायु, अग्नि, आकाश तथा पृथ्वी से नहीं हुआ। तू समस्त तत्वों, धार्मिक रस्मों से मुक्त है। तेरा न ही कोई विशेष नाम और न ही कोई विशेष स्थान है।

आओ! इस तथ्य को एक आम उदाहरण से समझने का यत्न करें। जैसा कि कहा जाता है कि हे पानी! तेरा रंग भी कैसा है! जिसमें भी मिला दो, उसी जैसा लगने लगता है! ठीक पानी ही की तरह प्रभु का कोई विशेष रंग नहीं, उसे जिसमें मिला दो वैसा ही दिखाई देने लगता है। ईश्वर का भी कोई विशेष नाम नहीं। उसे जिस भी नाम से पुकारों वह उसी नाम से प्रकट हो जाएगा। श्रद्धा-भाव से जहां भी खोजो वहीं प्रत्यक्ष हो जाएगा। वस्तुतः वह समस्त बन्धनों से मुक्त होते हुए भी प्यार के बन्धन में है, वह निराकार होते हुए भी श्रद्धा-भावनावश साकार स्वरूप है। अनाम होते हुए भी समस्त नाम उसी के हैं। अधाम होते हुए भी कण-कण में उसी का वास है।

नमसतं अजीते ॥ नमसतं अभीते ॥

२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४

नमसतं अबाहे ॥ नमसतं अढाहे ॥६॥

हे अकाल पुरख! तुझे नमस्कार है। तू अजित है। तुझे जीता नहीं जा सकता। तू निर्भय स्वरूप है अर्थात् तुझे किसी का भी भय नहीं। डर किसका होता है? जो उससे शक्तिशाली हो। ईश्वर से बलवान कोई नहीं, अत: उसे किसी का डर भी नहीं। न तो उसे कोई हिला सकता है और न ही उसकी सत्ता को कोई डुला सकता है। उसे कोई गिरा भी नहीं सकता।

यदि किसी दुनियावी व्यक्ति को आज कोई मान-सम्मान मिलता है तो कल उसके मान-सम्मान को ठेस भी पहुँच सकती है। आज जो बुलंदी पर है कल परिस्थितिवश वह नीचे भी गिर सकता है। ईश्वर इन सब परिस्थितियों से परे है। अत: ईश्वर के इस विलक्षण स्वरूप को भी गुरदेव नमस्कार करते हैं।

नमसतं अनीले ॥ नमसतं अनादे ॥
नमसतं अछेदे ॥ नमसतं अगाधे ॥७॥

हे आकल पुरख! तुझे नमस्कार है। तू अनिल अर्थात् हवा है और हवा है प्राण-वायु। जैसे प्राण-वायु के बिना किसी के जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती वैसे ही तेरे बिना किसी अस्तित्व की कल्पना तक नहीं हो सकती, जैसा कि गुरबाणी का फरमान है:

तुझ बिनु कवनु हमारा ॥
मेरे प्रीतम प्रान अधारा ॥ *(पन्ना २०६)*

हे ईश्वर! तू सबके प्राणों का आधार है। तू अनादि है अर्थात् मूल (जड़) रहित है। तेरी प्रारम्भता का कोई अन्दाजा भी नहीं लगा सकता। *'नमसतं अछेदे'* अर्थात् तेरे वजूद को कोई खंडित नहीं कर सकता। तू अगाध स्वरूप है, तू गहराइयों वाला सागर है। सागर की गहराई को मनुष्य बेचारा क्या मापेगा! हे प्रभु! तेरी गहराई को मापने का कोई पैमाना निर्मित नहीं हुआ और न ही कभी ऐसा सम्भव हो सकेगा। गुरबाणी-आशय के अनुसार इतना ही माना जा सकता है- *'जिन खोजा तिनि पाइआ गहरे पानी पैंठ'* अर्थात् जितनी एकाग्रता व पवित्र हृदय से जितनी गहराई में जाकर उसे खोजने का यत्न कोई करता है उसे उतने कीमती मोती प्राप्त होते हैं अर्थात् उसकी समीपता का एहसास होता है।

नमसतं अगंजे ॥ नमसतं अभंजे ॥
नमसतं उदारे ॥ नमसतं अपारे ॥८॥

हे वहिगुरू! तुझे नमस्कार है। तुझे कोई जीत नहीं सकता। तुझे कोई खंडित नहीं कर सकता अर्थात् तोड़ नहीं सकता। तू उदारदिल वाला है अर्थात् सखी है। तू अनुदार अर्थात् कंजूस नहीं है, क्योंकि कितने खुले दिल से तू दातें बख्श रहा है। उतनी ही उदारता से तूने यह रचना की है। तू अनंत, बेअंत है, तेरी रचना भी अनंत है, तेरा अंत पाना नामुमकिन है।

नमसतं सु एकै ॥ नमसतं अनेकै ॥
नमसतं अभूते ॥ नमसतं अजूपे ॥९॥

हे ईश्वर! तुझे नमस्कार है, तू एक आप ही आप है अर्थात् सारी सृष्टि का रचयिता तू आप ही है। तू स्वयं ही एक रूप से अनेक रूपों वाला है, जैसा कि धनासरी राग में श्री गुरू नानक देव जी का फरमान है:

सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ
सहस मूरति नना एक तुोही ॥
सहस पद बिमल नन एक पद गंध
बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥
सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥
(पन्ना १३)

(शेष पृष्ठ ४३ पर)

गुरू-उपमा : १३

भाई गुरदास जी की चौथी वार

*-प्रो. बलविंदर सिंघ जौड़ासिंघा**

नम्रता वाला हमेशा विजय प्राप्त करता है और ऊंचा (अहंकार वाला) सदैव ही पराजित होता है। इसका उपदेश छठी पउड़ी में मजीठ और कुसंभे के दृष्टांत द्वारा दिया है। मजीठ और कुसंभे का रंग पक्का और कच्चा कैसे है इसका भेद भाई गुरदास जी बताते हैं कि मजीठ का स्थान पृथ्वी के अंदर होता है। यह पौधे की जड़ों में होता है। पृथ्वी में से निकाल कर इसे ओखली में पाकर कूटा जाता है। फिर भारी चक्की में पीसा जाता है। उपरांत आग में उबाला जाता है। फिर रंग चढ़ाया जाता है। इस तरह पक्का होकर आप ही प्यारे को पक्का होकर मिलता है। दूसरी ओर कुसंभा जो धरती के ऊपर पंखुड़ियों में से निकलता है इसका रंग देखने में तो लाल सुरख होता है लेकिन जब उबाल कर इसका रंग चढ़ाया जाता है तो चार दिनों के बाद ही यह रंग फीका पड़ जाता है। कुसंभे का झूठा प्रेम चार दिनों का ही होता है। भाई गुरदास जी की वार में कुसंभे का तुरिया सिरे से निकलने के कारण अहंकार का रूप है और रंग कच्चा होता है। दूसरी ओर मजीठ जड़ें हैं जिनका स्थान हमेशा नीचा और धरती में होता है। नम्रता के भाव का रूप है और इसका रंग पक्का और चिरस्थाई होता है। इस दृष्टांत द्वारा अंत में बताया गया है कि नम्रता की हमेशा विजय होती है और ऊंचा रहने वाला सदैव पराजित होता है:

रंगु मजीठ कसुंभ दा कचा पका कितु वीचारे।
धरती उखणि कढीऐ मूल मजीठ जड़ी जड़तारे।
उखल मुहले कुटीऐ पीहणि पीसै चकी भारे।
सहै अवट्टणु अगि दा होइ पिआरी मिलै पिआरे।
पोहलीअहु सिरु कढि कै फुलु कसुंभ चलुंभ खिलारे।
खट तुरसी दे रंगीऐ कपट सनेहु रहै दिह चारे।
नीवा जिणै उचेरा हारे ॥६॥

चौथी वार की सातवीं पउड़ी में बताया गया है कि छोटी-छोटी वस्तुएं कैसे कार्य करती हैं। इस तरह सदैव विनम्र बन कर नम्रता के भाव को गृहण करने का उपदेश दिया गया है। इस पउड़ी में वर्णन किये अनुसार छोटी सी चींटी भ्रिंगी कीड़े के साथ मिलकर भ्रिंगी हो जाती है।

छोटी सी मकड़ी सैंकड़ों मीटर सूत मुंह से निकाल कर फिर निगल लेती है। शहद की छोटी सी मक्खी द्वारा दिया गया शहद बड़े-बड़े लोगों के घर तक पहुंच जाता है। छोटे से रेशमी कीड़े द्वारा निकाले रेशम के साथ बुने वस्त्र विवाह-शादियों के समय पहने जाते हैं। सपेरा छोटा सा मणका मुंह में रखकर देश-विदेश घूम लेता है। छोटा सा मोती बादशाह के गले में सुंदर लगता है। खटाई की छोटी सी जाग (दहीं) को बहुत बड़े दूध के बर्तन में डालने से दहीं बन जाता है।

कीड़ी निकड़ी चलित करि भ्रिंगी नो मिलि भ्रिंगी होवै।
निकड़ी दिसै मकड़ी सूतु मुहहु कढि फिरि संगोवै।
निकड़ी मखि वखाणीऐ माखिओ मिठा भागठु होवै।

**प्रभारी, सिख इतिहास रीसर्च बोर्ड (शि: गु: प्र: कमेटी), श्री अमृतसर।*

निकड़ा कीड़ा आखीऐ पट पटोले करि ढंग ढोवै।
गुटका मुह विचि पाइ कै देस दिसंतरि जाइ खड़ोवै।
मोती माणक हीरिआ पातिसाहु लै हारु परोवै।
पाइ समाइणु दही बिलोवै ॥७॥

घास जो सदैव ही पैरों के नीचे लताड़ा जाता है, को नम्रता के दृष्टांत के तौर पर दर्शाकर इस वार की आठवीं पउड़ी में बताया है कि एक निमाणा सा घास के अंदर भी बड़ा पासारा होता है तथा घास भी परोपकारी होता है। भाई गुरदास जी के अनुसार घास को लातों के नीचे लताड़ा जाता है। बेचारे को सांस तक नहीं मिलता। लेकिन इसके परोपकार इतने हैं कि घास को खाकर गाय दूध देती है। दूध से दहीं और दहीं से मक्खन और लस्सी बनती है। घी खाने के साथ-साथ शुभ गुणों के लिए भी काम में आता है। गाय से बैल पैदा होता है जिसका धर्म भार ढोना और हल खींचना होता है। इस तरह एक गाय से हजारों बछड़े पैदा होते हैं। सारी पउड़ी का सार यही है कि एक छोटे से घास की के तिनके के अंदर कितना बड़ा परउपकारी स्वभाव छुपा पड़ा है!

लतां हेठि लताड़ीऐ घाहु न कढै साहु विचारा।
गोरसु दे खड़ु खाइ कै गाइ गरीबी परउपकारा।
दुधहु दही जमाईऐ दईअहु मखणु छाहि पिआरा।
घिअ ते होवनि होम जग ढंग सुआरथ चज अचारा।
धरम धउलु परगटु होइ धीरजि वहै सहै सिरि भारा।
इकु इकु जाउ जणेदिआं चहु चका विचि वग हजारा। त्रिण अंदरि वडा पासारा ॥८॥

चौथी वार की नौवीं पउड़ी में 'तिल' के दृष्टांत द्वारा नम्रता की व्याख्या की गई है। भाई गुरदास जी के अनुसार छोटा सा तिल होकर जन्मा, नीचे से नीचा होकर अपने आप को जताने की कभी कोशिश नहीं की। इस छोटे से तिल ने फूलों की संगत की और सुगंधि से शोभायवान हुआ। फिर अपने आप को कोहलू में पीड़ने के बाद फुलेल बन अच्छा खेल खेला। राजाओं और महाराजाओं को आनंदित किया। तेल बनकर दीए के द्वारा जगत को रोशनी दी। दिए से काजल बन, आंखों में जा मिला। इस तरह इन गुणों के मालिक होकर अपने आप को बड़ा न कहलाया और न ही अपना आप जताया। इसी तरह नम्र गुणों का धारणी मनुष्य बहुगुणी होता हुआ भी अहंकारी नहीं होता।

लहुड़ा तिलु होइ जंमिआ नीचहु नीचु न आपु गणाइआ ॥
फुला संगति वसिआ होइ निरगंधु सुगंधु सुहाइआ।
कोलू पाइ पीड़ाइआ होइ फुलेलु खेलु वरताइआ।
पतितु पवित्रु चलित्रु करि पतिसाह सिरि धरि सुखु पाइआ।
दीवै पाइ जलाइआ कुल दीपकु जगि बिरदु सदाइआ।
कजलु होआ दीविअहु अखी अंदरि जाइ समाइआ।
बाला होइ न वडा कहाइआ ॥९॥

तिल की तरह बिनौला जो छोटा सा होता है तथा अनेकों कष्टों को सहार कर लोगों के पर्दे ढांकता है, उसको नम्रता की व्याख्या के लिए दृष्टांत के तौर पर लिया गया है। चौथी वार की दसवीं पउड़ी में बताया गया है कि संसार में बिनौले ने पैदा होकर मिट्टी में आपने आप को रखकर मिट्टी कर लिया है। इस नम्रता के कारण कपास के पौधे ने फिर अपने ऊपर टींडे लगवा अपने आप को हंस-हंस खिला दिया। फिर अपने आप को दोनों बेलनों में बिला कर तूंबा-तूंबा हो गया। उपरांत पेंजे द्वारा इसका लूं-लूं उड़ा लिया गया। फिर गोहड़े करा कर सूत बन गया। अपने आप को तना और बुना, ललारी द्वारा खुंब चढ़कर बड़े दुख सह

कर रंग चढ़ाया। फिर कैंची द्वारा काटा गया। सूई की मार सहकर तन ढ़ांपने वाला कपड़ा बन गया। इस तरह नम्रता का धारणी मनुष्य अपने ऊपर अनेकों कष्ट सह कर भी लोगों की सेवा में जुटा रहता है, लोगों के पर्दे ढांपता है।

होइ वड़ेवां जग विचि बीजे तनु खेह नालि रलाइआ।
बूटी होइ कपाह दी टींडे हसि हसि आपु खिड़ाइआ।
दुहु मिलि वेलणु वेलिआ लूं लूं करि तुंबु तुंबाइआ।
पिंञणि पिंञ उडाइआ करि करि गोड़ी सूत कताइआ।
तणि वुणि खुंबि चड़ाइ कै दे दे दुखु धुआइ रंगाइआ।
कैची कटणि कटिआ सूई धागे जोड़ि सीवाइआ।
लज्जणु कज्जणु होइ कजाइआ ॥१०॥

नम्रता की व्याख्या के प्रसंग को आगे ले जाते हुए ग्यारहवीं पउड़ी में 'अनारदाने' का दृष्टांत लेकर भाई गुरदास जी बताते हैं कि अनार का एक दाना मिट्टी में हरा वृक्ष बनता है। उसको लाल फूल लगते हैं। फिर इन फूलों को फल (अनार) लगते हैं। एक अनार में अनेकों दाने बन जाते हैं। आगे इनके फल तोड़ने पर फिर फल लगते हैं। इस ऊंची जात के अनारदाने ने जब नम्रता धारण की तो एक से लाखों दाने बनकर भाग्य जगा। इस तरह नम्रता के भाव वाले गुरमुखों के अमृत रूप सुख-फल के रस को कमी नहीं आती और मनुष्य की नम्रता धारण कर परोपकारी बनना चाहिए। अंत में भाई गुरदास जी बताते हैं कि 'निव चलणु' (भाव नम्रता) में रहने का रास्ता सतिगुरू जी ही बताते हैं:

दाणा होइ अनार दा होइ धूड़ि विचि धस्सै।
होइ बिरखु हरीआवला लाल गुलाला फल विगस्सै।
इकतु बिरख सहस फुल, फुल फल इक दू इक सरस्सै।
इक दू दाणे लख होइ फल फल दे मन अंदरि वस्सै।
तिसु फल तोटि न आवई गुरमुखि सुखु फलु अंम्रितु रस्सै।
जिउ जिउ लय्यनि तोड़ि फलि तिउ तिउ फिरि फिरि फलीऐ हस्सै।
निव चलणु गुर मारगु दस्सै ॥११॥

भक्त नामदेव जी . . . *(पृष्ठ २७ का शेष)*

बल्कि इस संसार को हर प्राणी के लिए आनंद-लोक के समान सुखदायक रूप भी प्रदान करता है। नाम-सुमिरन में निर्मल भाव से तल्लीन मनुष्य केवल अपना ही नहीं, संसार के जड़-चेतन सभी पदार्थों का भी उपकार करता है। इसीलिए भक्त नामदेव जी कहते हैं कि परमेश्वर का नाम सबसे सुंदर है। समस्त भ्रम इसके प्रभाव से नष्ट हो जाते हैं। प्रभु-नाम में दृढ़ श्रद्धा रखो, इसी से सबका भला होगा।

संदर्भ सूची:-

१. तैत्तिरीय उपनिषद २, ७
२. नारद भक्ति सूत्र २-४
३. निकोल मेकनिकॉल, साँग्स ऑफ मराठा सेंट्स, ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस, १९१९, पृष्ठ २९
४. आर. डी. रानाडे, मिस्टिसिज़्म इन महाराष्ट्र, पृष्ठ १५
५. श्री नामदेव गाथा, महाराष्ट्र शासन द्वारा प्रकाशित, पृष्ठ ८६३

विस्मादी वृत्तांत-९

भटके राही

*-डॉ. अमृत कौर**

कुछ भूले-भटके राही चले आ रहे हैं। लज्जा से नतमस्तक, श्रम से चूर, गर्दनें लटकाए, न जाने क्यों? सभी मौन हैं। मानो हारे हुए जुआरी घर लौट रहे हों। और अन्त में ये थके हुए पथिक अपने गांव पहुंच ही गए। द्वार खटखटाया पर कोई उत्तर नहीं। घर आए हुओं का यह कैसा स्वागत! बहुत बार द्वार खटखटाने पर भीतर से नारी-कंठ से आक्रोशपूर्ण आवाज आई, "कायरो, धोखेबाजो! लाहनत है तुम पर! वापिस लौट जाओ, हमारे घर के द्वार सदा-सदा के लिए तुम्हारे लिए बंद हो गए हैं। डूब मरो, चुल्लू भर पानी में। तुम्हें शर्म नहीं आई युद्ध के मैदान से पीठ दिखाकर भागते? जिस दशमेश पिता ने देश और धर्म की रक्षा के लिए, स्वतन्त्रता के लिए, चारों लाल कुर्बान कर दिए, सरबंस न्योछावर कर दिया, उसको धोखा देकर आते, पीठ दिखा कर आते, तुम्हारे प्राण रास्ते में ही क्यों न निकल गए? क्या तुम गुरू जी की इस शिक्षा को भूल गए?

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥" *(पन्ना १४१२)*

और इतने में घर से निकल आई एक नारी रणचंडी का रूप धारण किए—हाथ में तलवार लिए—वीरता की साकार प्रतिमा—नाम था उसका माई भागो—अमृतसर जिले के गांव झबाल के निवासी भाई मालोशाह की बेटी, गांव पट्टी के रहने वाले भाई निधान सिंघ की पत्नी।

माई भागो बचपन से ही एक बहादुर बालिका थी। घुड़सवारी और तलवार चलाने की शिक्षा उन्होंने अपने वीर पिता से प्राप्त की थी। ललकार कर बोली इन भगौड़ों से, "कायरो! चूडियां पहन कर घर में बैठो और हम स्त्रियां पुरुष-वेश धारण कर, तलवार हाथ में लेकर लड़ने के लिए जाएंगी और तुम्हारे कलंक को अपने लहू से धोने का प्रयास करेंगी। तभी इस कलंक की कालिमा धुल पाएगी।"

इन भगौड़े सिखों में से एक ने अपनी सफाई देने का प्रयास करते हुए कहा, "पर बहन, यह तो बताओ कि आखिर हम करते भी तो क्या? कई महीने हो गए हैं मुगलों को आनंदपुर के किले को घेरा डाले। कहां एक ओर मुट्ठी भर सिख और दूसरी ओर मुगलों की विशाल सेना। यह ठीक है कि गुरू जी एक अद्वितीय वीर हैं, उनमें अदम्य साहस और उत्साह है। उन्होंने सिखों में वे प्राण फूंक दिए हैं कि उनका यह कथन-*सवा लाख से एक लड़ाऊं-तबै गोबिंद सिंघ नाम कहाऊं* अक्षराक्षर सत्य सिद्ध हो रहा है। यही कारण है कि अब तक मुट्ठी भर सिख लाखों का मुकाबला करते रहे हैं। महीनों हो गए थे हमें भूखे मरते और जब सहायता की कहीं से भी कोई आशा न रही तो आखिर भूख के हाथों बेहाल होकर हमें यह 'बेदावा' लिखकर देना पड़ा कि *हम तुम्हारे सिख*

**१५४, ट्रिब्यून कालोनी, बलटाना, ज़ीरकपुर-१४०६०३*

नहीं और आप हमारे गुरू नहीं।" और अपनी बात के समर्थन के लिए उसने अपने कातर नेत्रों से ग्रामवासियों को निहारा।

"पर कायरो, तुम्हें शर्म भी न आई उस गुरू को यह 'बेदावा' लिखकर देते कि न हम तुम्हारे सिख और न आप हमारे गुरू। आज से हमारा आपके साथ कोई नाता नहीं। जिस गुरू ने तुम्हारे लिए सब कुछ न्योछावर कर दिया-

इन पुत्रन के सीस पर वार दिए सुत चार।
चार मुए तो किआ हुआ जीवत कई हजार?"

"जिस गुरू ने देश की रक्षा के लिए सर्वस्व दान कर दिया, उनके साथ ऐसा धोखा, छल, कपट और बेवफाई। युद्ध वे अपने स्वार्थ के लिए तो लड़ नहीं रहे, वे तो हम निष्प्राण मूर्तियों में प्राण फूंकने आए हैं। हमारा देश परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ है। विदेशियों ने हमारी कायरता से लाभ उठा हमारे घर में ही हमसे जीने का अधिकार छीन लिया है। यह गुरू के कारण ही है कि आज हम सिर उठा कर चल सकते हैं लाखों के साथ मुकाबला कर सकने को। नहीं तो याद नहीं तुम्हें अपने इतिहास के वे पृष्ठ जब मुट्‌ठी भर विदेशियों ने सोमनाथ के मन्दिर को चकनाचूर कर दिया, करोड़ों की सम्पत्ति लूट कर ले गए? क्या तुम्हें याद नहीं कि हमारी हज़ारों औरतों को काबुल और कंधार की मंडियों में बेचा और हम उनका मुंह ताकते रह गए? बाबर के अत्याचार देख कर गुरू नानक साहिब ने परमात्मा को उलाहना देते हुए कहा था:

एती मार पई कुरलाणे तैं की दरदु न अइआ ॥"
(पन्ना ३६०)

"जिस गुरू ने हमें इज्ज़त के साथ जीना सिखाया है, उसके आदर्शों के लिए यदि तुम मर भी जाते तो तुम्हारा जीवन धन्य हो जाता, तुम सदा-सदा के लिए अमर हो जाते।"

यह लाहनत भरी फटकार सुनकर उनके मस्तक नत हो गए। वे अपनी आंखों में स्वयं ही शर्मिन्दा हो गए। उनकी आँखें पश्चाताप के आंसुओं से भीग गईं। उन्हें स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगा कि कितना बड़ा पाप किया है उन्होंने अपने गुरू के साथ मुसीबत के समय बेवफाई करके। लज्जा से नतमस्तक उन्होंने माई भागो से पूछा कि अब वे क्या करें?

माई भागो उन्हें प्रेरित करती हुई कहने लगीं, "अब भी कुछ नहीं बिगड़ा, चलो मेरे संग वापिस और गुरू जी के इस धर्म-युद्ध में अपने प्राणों का बलिदान देकर अपने कलंक की कालिमा को धो डालो। गुरू दायलु हैं। फिर से तुम्हें अपना लेंगे: *जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै ॥"* और इतना कहते हुए वह वीर स्त्री अस्त्र-शस्त्र सजा घोड़े पर सवार होकर, पुरुष-वेश धारण कर उनके साथ चल पड़ी। रणक्षेत्र से भाग निकले सिख, मानसिक रूप से क्षमा-याचना के लिए, तत्पर-प्राणों का बलिदान देने के वास्ते दृढ़ संकल्प लिए उसके पीछे चल पड़े। लम्बी-स्वस्थ-शक्तिशाली माई भागो जब घोड़े पर सवार होकर रवाना हुई तो उसके मुख पर अद्वितीय क्रान्ति और शौर्य की झलक थी। गुरू जी के लिए सर्वस्व न्योछावर कर देने की भावना उसके सीने में धड़क रही थी।

इस दौरान बहुत कुछ घटित हो चुका था। गुरू जी आनंदपुर का किला छोड़ चुके थे। उनके चारों लाल शहीद हो चुके थे। माई भागो के संरक्षण में निकले इन चालीस सिखों के समूह में अनेकों और सिख भी गुरू जी के लिए शहीदियां प्राप्त करने की भावना से शामिल होते चले गए। माई भागो के अपने भ्राता-भाई तारा सिंघ और भाई दिलबाग सिंघ भी इस जत्थे में

शामिल हो गए।

जब सिखों का यह समूह खिदराणा (अब मुक्तसर) के स्थान पर पहुंचा तो पश्चाताप के एहसास के कारण प्राण न्योछावर कर देने के जज्बे से भरपूर इन वीर सिखों ने मुगल सेना का डट कर मुकाबला किया। उन्होंने मुगलों को चारों ओर से घेर लिया। बड़े-बड़े तम्बू लगाकर यह प्रभाव दिया कि बहुत विशाल सिख सेना आ पहुंची है। माई भागो ने इस युद्ध में अद्‌भुत शौर्य और पराक्रम का परिचय दिया। 'सति श्री अकाल' के जयकारों से आकाश गूंज उठा। मुगल सेना इस अकस्मात आक्रमण के लिए तैयार न थी। घमासान युद्ध हुआ। इन सिखों ने प्राण हथेली पर रख कर इस कदर डट कर मुकाबला किया कि मुगलों के पांव उखड़ गए और वे युद्ध-क्षेत्र छोड़ कर भाग निकले।

शाम का समय था। सूर्य डूबने की तैयारी कर रहा था। युद्ध समाप्त हो चुका था। युद्ध-क्षेत्र लाशों से भरा पड़ा था। चारों ओर लाल-लाल खून के धब्बे पड़े थे। डूबते सूर्य की लालिमा ने रक्त की लालिमा को और भी अतिरंजित कर दृश्य को करुणामय बना दिया था। पर कइयों में अब भी प्राण शेष थे और पानी की कुछ बूंदों के लिए सिसक रहे थे।

इतने में गुरू जी ने देखा कि बेदावा लिख कर देने वाले बहुत सारे सिख वीरतापूर्वक लड़ते हुए बुरी तरह घायल हुए पड़े थे। कुछ उनमें से शहीद हो चुके थे और कुछ अभी सिसक रहे थे। गुरू जी का चेहरा उनकी वीरता और त्याग देखकर खिल गया। एक दैवी नूर से उनकी आंखें जगमगा उठीं। उन्हें अटूट विश्वास था कि उनके सिख उन्हें कभी धोखा नहीं दे सकते और उनका यह विश्वास रंग लाया था। उनकी दृष्टि उनके नेता भाई महा सिंघ पर पड़ी जो अपने जीवन की अंतिम सांसें गिन रहा था। गुरू जी ने उसका सिर अपनी गोदी में रखा। उसके मुंह पर पानी के छींटे मारे और प्यार से उसका सिर सहलाने लगे। भाई महा सिंघ ने आंखें खोलीं। अपना सिर अपने दातार की गोदी में रखा देख कर कृतज्ञता के कारण उसकी आंखों से आंसू छलक पड़े। एक दैवी आभा से उसका मुखमंडल खिल उठा। धन्यवाद करते हुए भाव-विह्वल स्वर में बोला, "आह! मैं कितना खुशनसीब हूं कि इस मिलन की बेला का आनन्द ले रहा हूं। यह मेरा सौभाग्य है कि जीवन के अन्तिम समय मेरा सिर मेरे स्वामी, मेरे सरताज की गोद में है। गुरू जी हमें क्षमा कर दीजिए, बेदावा फाड़ दीजिए तभी हम सभी शान्ति से प्राण त्याग सकेंगे।" और उसने गुरू जी को अपने वापिस आने की सम्पूर्ण कहानी सुनाई और कहा कि हमारी वापसी का सम्पूर्ण श्रेय माई भागो को है जिसने वीर वेश धारण कर, घोड़े पर सवार हो, हाथ में तलवार लेकर स्वयं युद्ध-क्षेत्र में लड़कर हमारा पथ-प्रदर्शन किया है। अपने पथ-प्रदर्शन द्वारा हमें पुनः युद्ध-क्षेत्र में लाकर हमें पश्चाताप और शर्मिन्दगी से बचा लिया है। शौर्य और वीरता का जो उदाहरण माई भागो ने स्थापित किया है, उसने उसे एक आदर्श नारी बना दिया है।" गुरू जी ने मुस्करा कर कहा, "भाई महा सिंघ। मुझे पता था कि एक दिन तुम लोग अवश्य वापिस आओगे और कहोगे कि बेदावा फाड़ दीजिए, क्योंकि मेरे सिख मुझसे अलग हो ही नहीं सकते! *'गुरू सिखु सिखु गुरू है एको गुर उपदेसु चलाए'* आनंदपुर का किला छोड़ते समय मेरा परिवार मुझसे बिछुड़ गया। मेरा बहुमूल्य साहित्य सरसा नदी की भेंट हो गया। पर तुम लोगों का बेदावा मैंने अपने सीने से लगा कर

रखा, क्योंकि मुझे पता था मेरे सिख मुझे छोड़ ही नहीं सकते-मुझसे अलग हो ही नहीं सकते। क्या पता तुम कब आ जाओ और कहो कि गुरू जी! हम आ गए!" गुरू जी ने बेदावा निकाला और भाई महा सिंघ के सामने ही टुकड़े-टुकड़े कर दिया। भाई महा सिंघ ने सुख की सांस ली। उसका मुख दिव्य शान्ति की आभा से चमक उठा। उसे इसी क्षण की प्रतीक्षा थी। इसके साथ ही उसकी आत्मा इस नश्वर शरीर को छोड़ कर अमर हो गई।

गुरू जी चक्कर लगाते हुए माई भागो के पास पहुंचे जो बेहोश पड़ी थी। उसके घाव कुछ अधिक गहरे नहीं थे। थोड़े से उपचार के साथ ही उसे होश आ गई। उसने गुरू जी से बेदावा फाड़ देने के लिए प्रार्थना की। गुरू जी ने उसे बताया कि बेदावा फाड़ दिया गया है। उन्होंने उसे प्यार से थपथपाते हुए कहा, "मेरी बच्ची, तुम धन्य हो। मुझे तुम पर गर्व है। तुमने सिखी की आन और शान को बरकरार रखते हुए शहीदी की परंपरा को आगे बढ़ाया है। तुम्हारी चुनौती और पथ-प्रदर्शन ने भगौड़ों को वीर बनाया है। जिस देश में तुम्हारे जैसी वीरांगनाएं हों वह देश अधिक समय परतन्त्रता की जंजीरों में जकड़ा नहीं रह सकता। तुम में अदम्य वीरता और त्याग की भावना है। तुम स्त्री जाति का पथ-प्रदर्शन कर देश की तस्वीर को बदल दो। गुरू-घर को तुमसे बहुत आशाएं हैं।"

माई भागो ने शेष जीवन गुरू-चरणों में रहकर मानव सेवा में व्यतीत करने का संकल्प किया। आज भी मुक्तसर का गुरुद्वारा श्री टुट्टी गंढी साहिब इन बहादुर शहीदों की शौर्य-गाथा पुकार-पुकार कर सुना रहा है। ■

जापु साहिब की विचार व्याख्या . . . *(पृष्ठ ३६ का शेष)*

तेरी हस्ती पाँच तत्वों से निर्मित नहीं है। अजूपे अर्थात् तू समस्त बन्धनों से मुक्त है। 'अजूपे' शब्द का अर्थ प्रो. साहिब सिंघ जी के चिन्तनानुसार विचार में ला सकते हैं। 'जूप' अर्थात् वह किला जिसके साथ बलि दिए जाने वाले पशु को बाँधा जाता है और मारा जाता है। अत: वह ईश्वर अजूप है, उसे कोई चाहत नहीं कि कोई उसके समक्ष किसी पशु की बलि दे, क्योंकि उस जीव में भी ईश्वर स्वयं ही है। कहने से अभिप्राय, ईश्वर पशु-बलि जैसे किसी भी बाहरी कर्म-काण्ड आदि से प्रसन्न नहीं होता। गुरबाणी के आशयानुसार तो *'अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु'* हैं, उसके दर पर तो जीवों पर दया करने वाले स्वीकृत हैं।

नमसतं त्रिकरमे ॥ नमसतं त्रिभरमे ॥
नमसतं त्रिदेसे ॥ नमसतं त्रिभेसे ॥१०॥

हे वहिगुरू! तुझे नमस्कार है। हे ईश्वर! तुझे मिलने के लिए कोई धार्मिक कर्मकांड, रस्में आदि नहीं करनी पड़तीं। तू कर्मों के बन्धनों एवं जंजालों से परे है। अत: तू किसी भ्रम जाल में नहीं फँसता। तेरा कोई एक देश नहीं है अर्थात् तू किसी विशेष स्थान का निवासी नहीं है और न ही तू कोई विशेष पहरावा पहनता है। हे वाहिगुरू! तू भ्रमों से मुक्त है तथा देश और वेश से रहित है। ■

दशमेश पिता के ५२ दरबारी कवि-३

संस्कृत एवं ब्रज भाषा के विद्वान कवि अमृत राय

*-डॉ. राजेंद्र सिंह**

कवि अमृत राय को काव्य-रचना की प्रतिभा परंपरा के रूप में अपनी कुल से मिली। आपका परिवार पीढ़ियों से ज्ञानार्जन से सम्बध रहा था। प्रसिद्ध विद्वान् छैलराय भट्ट आपके पिता थे। ऐतिहासिक स्रोतों में आपको लाहौर का निवासी बताया गया है। इसके अलावा और कोई विशेष जानकारी आपके विषय में नहीं मिलती। दशम पिता श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी के साहित्य-प्रेमी व्यक्तित्व और श्री आनंदपुर साहिब में साहित्य-प्रश्रय हेतु किये जा रहे प्रयत्नों ने कविवर अमृत राय को भी आकर्षित किया और आप भी गुरू-दरबार के दरबारी कवियों में शामिल होकर गुरू साहिब द्वारा चलाये गये साहित्य-यज्ञ का अंग बने।

कवि अमृत राय की निश्चित् जीवन-तिथियों पर अभी शोध होना शेष है। फिलहाल यही कहा जा सकता है कि आप गुरू साहिब के समकालीन होने के कारण संभवत: १६५० से १७२० ई तक जीवन-पंथ के यात्री रहे होंगे।

श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी ने कवि अमृत राय को प्राचीन संस्कृत-ग्रंथों को जन-भाषा में अनुवाद करने की जिम्मेदारी से निवाजा। आपकी कुल की प्रतिष्ठित परम्परा और गुरू जी द्वारा सौंपे गये कार्य से यह भली-भांति स्पष्ट हो जाता है कि आप संस्कृत के उत्कृष्ट विद्वान थे। आपके द्वारा किये अनुवाद कार्य में जो अंश काल-कलवित होने से बचा रह पाया वह 'महाभारत' के 'सभापर्व' का हिंदी अनुवाद है। यह एक श्रेष्ठ एवं उच्च कोटि का अनुवाद है। आपके इस कार्य से प्रसन्न होकर दशमेश पिता ने आपको 'साठ हजार रुपये' का पुरस्कार भी प्रदान किया था।

इसके अतिरिक्त कवि अमृत राय ब्रज भाषा में भी उच्च कोटि की काव्य-रचना किया करते थे। आपके ब्रज भाषा में रचे गये अनेक कबित्त और सवय्ये उपलब्ध हैं। इनमें मुख्य रूप से दशम पिता की स्तुति की गई है-

जाहीं ओर जाऊं अति आदर तहां ते पाऊं,
तेरे गुन गन को अगाउ गने शेष जू।
हीर चीर मुकता जे दिन प्रति दान देत,
तिनै देख देख अभिलाखत धनेश जू।
गुनिन में गुनी कवि अम्रित पढैया तेरो,
जब इनै हेरो पयार कीजै अमरेश जू।
श्री गुरू गोबिंद सिंघ छीर निधि पार भई,
कीरति तिहारी तुमै कहिकै सदेस जू।

यहां श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी की विनम्रता, दानशीलता, प्रेम-प्रवृत्ति, प्रगल्भता (दूसरों को आदर देने की प्रवृत्ति) और अन्य मानवीय गुणों को रेखांकित किया है। अक्सर पौराणिक संदर्भों को आधार बना कर अपनी बात कहने की प्रवृत्ति भी दिखाई देती है-

प्रिथमे है जायो प्रिथु बेन नृप ले खिलायो,

(शेष पृष्ठ ४८ पर)

** १/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना।*

ख़बरनामा

पाक सरकार सिखों के बीच दरार पैदा करने की फिराक में

अमृतसर: पाकिस्तान के कुछ कट्टरवादी संगठनों द्वारा लाहौर के नौलखा बाजार में स्थित शहीद भाई तारू सिंघ शहीद की याद में निर्मित ऐतिहासिक गुरुद्वारे पर कब्जा करने के बाद पाकिस्तान सरकार ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा भेजे जाने वाले श्रद्धालुओं के जत्थे को अनुमति देने से कन्नी काटनी शुरू कर दी है। साथ ही पाक सरकार दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी व अन्य सिख संगठनों द्वारा भेजे जाने वाले जत्थों को अनुमति देकर सिख संस्थाओं के बीच दरार पैदा करने की 'ओछी राजनीति' कर रही है।

एस. जी. पी. सी. ने श्री गुरू नानक देव जी के ज्योति जोत पर्व पर गुरुद्वारा श्री करतारपुर साहिब में श्रद्धालुओं का जत्था भेजने की अनुमति मांगी थी लेकिन पाकिस्तान सरकार ने इनकार कर दिया, जबकि भाई मरदाना यादगार कीर्तन दरबार सोसायटी को अनुमति दे दी। सोसायटी के अध्यक्ष स. हरपाल सिंघ के नेतृत्व में ५८ सिख श्रद्धालुओं का जत्था वाघा सड़क सीमा के रास्ते पाकिस्तान रवाना हुआ।

एस. जी. पी. सी. के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने पाकिस्तान सरकार की इस ओछी राजनीति को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए कहा कि पाकिस्तान सरकार भाई तारू सिंघ शहीद गुरुद्वारा में कट्टरपंथियों द्वारा किए गए कब्जे को छिपाना चाहती है। पाकिस्तान सरकार ने कुछ कमेटियों, साईं मियां मीर फाउंडेशन व ननकाणा साहिब सेवा सोसायटी को जत्थे भेजने की अनुमति देकर एस. जी. पी. सी. की अनदेखी की है।

उन्होंने कहा कि पाकिस्तान सरकार ऐसे लोगों को वीजा दे रही है जिनकी गतिविधियां संदिग्ध रही हैं। एस. जी. पी. सी. पाकिस्तान गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के साथ संबंधों को और मजबूत करना चाहती है, लेकिन एस. जी. पी. सी. की अनदेखी कर पीएसजीपीसी अपनी जिम्मेदारी से भाग रही है।

मैरिज पैलेस में नहीं जाएंगे श्री गुरू ग्रंथ साहिब के पावन स्वरूप

अमृतसर: श्री गुरू ग्रंथ साहिब की मर्यादा और सम्मान की खातिर पंजाब सरकार ने नया कानून लाने की तैयारी शुरू कर दी है। इसके मुताबिक आनंद कारज या किसी अन्य समारोह के लिए श्री गुरू ग्रंथ साहिब के स्वरूप को किसी होटल या मैरिज पैलेस में ले जाना गैर-कानूनी माना जाएगा।

प्रस्तावित कानून का मसौदा तैयार करने के लिए सिख बुद्धिजीवियों और कानूनविदों की एक कमेटी का गठन किया गया है। राज्य सरकार के मुख्य सचिव स. रमेशइंदर सिंघ को कमेटी का सचिव बनाया गया है। कमेटी के अन्य सदस्यों में डॉ. खड़क सिंघ, डॉ. जसबीर सिंघ आहलूवालिया, डॉ. बलवंत सिंघ, स. वरियाम सिंघ, डॉ. जसबीर सिंघ साबर, एडवोकेट स. हरदेव सिंघ मत्तेवाल और शिरोमणि कमेटी के प्रधान स. अवतार सिंघ शामिल हैं।

प्रस्तावित कानून के लिए कमेटी बनाए जाने की पुष्टि करते हुए गुरू नानक देव यूनीवर्सिटी, अमृतसर के गुरू नानक अध्ययन विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. बलवंत सिंघ ने बताया कि कई निजी

प्रकाशक श्री गुरू ग्रंथ साहिब का स्वरूप छापते समय मर्यादा का ख़्याल नहीं रखते।

मर्यादा की उल्लंघना के कई मामले श्री अकाल तख्त साहिब पर भी आ चुके हैं, मगर सिंघ साहिबान के आदेश के बावजूद भी निजी प्रकाशकों की ओर से श्री गुरू ग्रंथ साहिब के स्वरूप छापने का क्रम जारी है। इसी तरह शादी समारोहों में श्री गुरू ग्रंथ साहिब को होटल आदि में ले जाना भी जारी है। इस नए कानून में श्री गुरू ग्रंथ साहिब के स्वरूप प्रकाशित करने का अधिकार सिर्फ एस.जी.पी.सी. को होगा। आनंद कारज या किसी अन्य समारोह के लिए स्वरूप को किसी होटल या मैरिज पैलेस में ले जाना गैर-कानूनी होगा। इसका उल्लंघन करने वाले को ५ साल तक की कैद या/और एक लाख रुपए जुर्माना भरना पड़ सकता है। उन्होंने बताया, मसौदा तैयार हो जाने के बाद राज्य सरकार इसे मंजूरी के लिए केंद्र सरकार के पास भेजेगी। *(दैनिक भास्कर)*

विरसे को संजोये है सिख अजायब घर : जत्थेदार अवतार सिंघ

अमृतसर: राष्ट्रीय विरसे की संभाल के लिए मौजूदा केंद्रीय सिख अजायब घर की इमारत छोटी है। इसका विस्तार करने के लिए यह कार्य विचाराधीन है। यह अजायब घर अपने आप में विलक्षण इतिहास संजोये बैठा है। उक्त विचार एस. जी. पी. सी. के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने सिख पंथ के महान विद्वान ज्ञानी प्रीतम सिंघ, महान सेवक जत्थेदार दया सिंघ तथा ज्ञानी अमोलक सिंघ के चित्र केंद्रीय सिख अजायब घर में सुशोभित करने से पूर्व सजे दीवान को संबोधित करते हुए प्रकट किए।

उन्होंने कहा कि इस स्थान पर उन महान व्यक्तियों के चित्र स्थापित किए जाते हैं जो अपने जीवन में सिख कौम व पंथ के लिए विलक्षण इतिहास सृजित कर जाते हैं, जिससे आने वाली पीढ़ी प्रेरणा ले सके। यह अजायब घर चाहे दुनिया में कई अजायब घरों से आकार में छोटा होगा पर यह सिख कौम के अमीर विरसे, सभ्याचार व शानदार इतिहास को अपने में समेटे हुए है। ऐसा विरसा किसी भी अजायब घर में नहीं हो सकता।

इस अवसर पर एस. जी. पी. सी. के महासचिव स. सुखदेव सिंघ ने कहा कि नैतिक व पंथक फर्जों पर पूरा उतरते हुए गुरू-सिखों के चित्र आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणा-स्रोत होते हैं। एस. जी. पी. सी. के सचिव स. दलमेघ सिंघ ने कहा कि हर रोज लाखों लोग संसार में आते हैं व लाखों चले जाते हैं, परंतु संगत केवल उनको ही याद करती है जो कुछ अलग इतिहास बना जाते हैं। इस अवसर पर श्री हरिमंदर साहिब के ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी मल्ल सिंघ, ज्ञानी जगतार सिंघ, ज्ञानी जसविंदर सिंघ, एस. जी. पी. सी. सदस्य स. राजिंदर सिंघ, स. रघबीर सिंघ, स. कश्मीर सिंघ बरियार, स. दिलबाग सिंघ पठानकोट आदि मौजूद थे।

इस मौके ज्ञानी अमोलक सिंघ के बेटे स. सविंदर सिंघ, स. जसविंदर सिंघ; ज्ञानी प्रीतम सिंघ के बेटे स. गुरिंदरपाल सिंघ, स. हरप्रीत सिंघ, स. दविंदरपाल सिंघ व स. महिंदर सिंघ को गुरू-घर की बख़्शिश सिरोपा भेंट किया गया। ■

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसैट प्रैस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर से प्रकाशित किया। संपादक स. सिमरजीत सिंघ। जारी करने की तिथि : ०१-११-२००७

आपका पत्र मिला

नारीत्व, नारीवाद और नारीयता के अंतर का स्पष्टीकरण

मैं 'गुरमति ज्ञान' पत्रिका की नई पाठक हूँ। मुझे यह पत्रिका बहुत प्रभावशाली लगी। यह एक धार्मिक, ऐतिहासिक व ज्ञानवर्धक पठनीय पत्रिका है। इस पत्रिका के मार्च २००७ अंक में कैप्टन मनमीत कौर द्वारा लिखित लेख 'आधुनिक नारी के सशक्तिकरण में बाधाएं और उनका समाधान' पढ़ा जो बहुत अच्छा लगा। यह लेखिका के गहन अध्ययन, साहित्यिक अभिरुचि और योगदान का परिचायक है।

इस लेख में नारीत्व, नारीवाद और नारीयता के अंतर का स्पष्टीकरण बहुत ही सरल भाषा में किया गया है जो कि पाठकों के मन-मस्तिष्क पर अमिट छाप छोड़ सकता है। आचार्य मण्डन मिश्र की पत्नी शारदा देवी का उदाहरण देकर स्त्री की सहधर्मिता और योग्यता का परिचय प्रस्तुत करने के साथ ही ऐसी नारी के प्रति श्रद्धा से नतमस्तक होने की भावना को जागृत करता है, जैसा कि किसी कवि ने कहा है-

"जगजीवन मानव के संग हो मानवी प्रतिष्ठित।
प्रेम स्वर्ग हो धरा मधुर नारी महिमा से मंडित।"

-विमला भारती, राजेन्द्रनगर, लखनऊ।

समयानुसार पत्रिका

'गुरमति ज्ञान' मई-जुलाई अंक प्राप्त हुआ। इसके अंतर्गत किरत करके जीवन निर्वाह करने का गुरू-मंत्र मन को छू गया। श्री गुरू अरजन देव जी विषयक विशिष्ट लेखों में डॉ. हरमहेन्द्र सिंघ जी, डॉ दलजीत सिंघ जी, डॉ. गुरचरण सिंघ जी, डॉ नीतू रानी जी के विचार स्पष्ट व ज्ञानवर्धक हैं।

शहीद भाई मनी सिंघ जी का बेमिसाल व्यक्तित्व आकर्षित करता है। इसके अतिरिक्त अन्य साम्रगी भी मननीय एवं प्रशंसनीय है। 'महाराजा रणजीत सिंघ की अंतिम जीवन-यात्रा' ऐतिहासिक घटना के रूप में मार्मिक, चित्रात्मक शैली में व्यक्त हुई है। आज उनकी कमी है और भविष्य में भी महसूस होगी।

आज के युग में समयानुसार पत्रिका प्राप्त हो यह सबसे बड़ा कार्य है। कमेटी के सभी कार्यकता को अंतःकरण से धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। भविष्य में इसी तरह अच्छे-अच्छे लेख, कहानी, व्यक्ति-चित्रण, गुरबाणी-व्याख्या प्रकाशित करते रहें, यही आपसे प्रार्थना है।

विशेष जानकारी हेतु, जामनगर (गुजरात) में 'इरवीन अस्पताल' कई वर्षों से कार्यरत है। फिलहाल, अस्पताल का नाम बदलकर 'गुरू नानक अस्पताल' रखा गया है।

-डॉ. शांतिलाल सिणोजिया
जिला जामनगर (गुजरात)

सिख धर्म मर्यादा विशेषांक निकालें

आपने मासिक 'गुरमति ज्ञान' पत्रिका हिन्दी में प्रकाशित करके बहुत-बहुत परोपकार किया है। हम उत्तर प्रदेश के निवासी हैं। आज भी हमारे बहुत सारे भाई-बहनों व बच्चों को पंजाबी पढ़नी नहीं आती है। उन्हें 'गुरमति ज्ञान' पत्रिका द्वारा अपने धर्म, मर्यादा व सिख इतिहास की और अधिक जानकारी मिलेगी। कृप्या अति शीघ्र सिख धर्म मर्यादा विशेषांक निकालें ताकि हम सब गुरू-मर्यादा व गुरसिख मर्यादा के अनुसार अपना जीवन-यापन कर गुरू जी की खुशियों के पात्र बन सकें।

-स. मनजीत सिंघ,
अध्यक्ष, सिख वैलफेयर ओर्गनाईजेशन, मेरठ।

प्रकाशित सामग्री में नवीन ताज़गी

बिल्कुल नए परिवेश और नए अंदाज में 'गुरमति ज्ञान' के प्रकाशन का हार्दिक स्वागत।

भारत सरकार ने इसका पंजीकरण कर हजारों पाठकों के मन में आशातीत उल्लास बढ़ाया है। पत्रिका के नवीन प्रकाशन का मुख्य पृष्ठ अति आकर्षक और प्रेरक लगा। प्रकाशित सामग्री में भी नवीन ताजगी और सुंदर प्रस्तुति से इसका भविष्य अत्यंत उज्जवल है। आपका श्रम और संपादकीय टीम का सहयोग इसे नित्य नई ऊंचाइयां देंगे और इसके विस्तार का अधिक से अधिक क्षेत्र तैयार करेंगे, ऐसी कामना है।

-जगदीश चंद्र शर्मा, पो. गिलूंड, राजस्थान।

समस्त शहीदों को प्रणाम

आपके द्वारा प्रेषित पत्रिका का अंक मिला। अंक में आस्था तो आदि से अन्त तक झांकती है साथ ही जो ऐतिहासिक तथ्य उजागर किये गये हैं उन्हें जान कर मन करता है कि संपादक और लेखक दोनों को प्रणाम! ऐसा लिखने वालों के हाथ हार्दिक प्यार के पात्र हैं। पंचम गुरू श्री गुरू अरजन देव जी की जो जानकारी आपने दी है आज के युग में सर्वथा जानने योग्य है और बलिदान अनुकरण योग्य है। शहीदों ने जो बलिदान किये हैं उनके पीछे इन्हीं महापुरुषों की सतत् प्रेरणा है। मैं समस्त शहीदों को आपके माध्यम से प्रणाम निवेदित करता हूँ। वे सब के सब धन्य हैं, प्रणम्य हैं।

-डॉ. नागेन्द्र, रामपुर।

■

संस्कृत एवं ब्रज भाषा के विद्वान . . . *(पृष्ठ ४४ का शेष)*

चूम चूम मुख दै दधीचि सुख दीनो है।
बलिराज मन भायो हरिचंद लै लडायो,
चलन सिखायो कल करण प्रबीनो है।
विक्रम पढ़ायो भोज भोजन करायो जग,
देव पहिरायो जग अभिलाख लीनो है।
श्री गुरू गोबिंद राय अम्रित सुद्रिषि ही ते,
तैं तो प्रतिपाल छितिपाल जस कीनो है।

श्री आनंदपुर साहिब के युद्ध (दिसंबर १७०४ ई) में अधिकांश साहित्य नष्ट हो जाने के बावजूद जो अत्यल्प काव्य-रचनाएं बची रही हैं वे कवि अमृत राय को पंजाब के साहित्य में उल्लेखनीय स्थान दिलाने में सक्षम हैं। ■

डॉ. अमृत कौर भाई संतोख सिंघ साहित्य शिरोमणि पुरस्कार से सम्मानित

विश्व प्रसिद्ध लेखिका डॉ. अमृत कौर को जनवरी २००७ में हरियाणा सरकार की ओर से पंजाबी साहित्य अकादमी पंचकूला द्वारा 'भाई संतोख सिंघ साहित्य शिरोमणि पुरस्कार' प्रदान किया गया। डॉ. अमृत कौर की रचनाएं देश-विदेश की पत्र-पत्रिकाओं के अलावा 'गुरमति ज्ञान' तथा 'गुरमति प्रकाश' (पंजाबी) में प्रकाशित होती रहती हैं। 'गुरमति ज्ञान' में डॉ. अमृत कौर की 'मानस की जात' नामक पुस्तक में दर्ज सिख इतिहास की गौरवशाली गाथाएं 'विस्मादी वृत्तांत' नामक कालम के अंतर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। डॉ. अमृत कौर एस. डी. कालेज मानसा (पंजाब) की प्रिंसीपल भी रह चुकी हैं। वर्तमान समय में वे 'मेजर रीसर्च प्रोजेक्ट यू. जी. सी.' में रीसर्च स्कालर के तौर पर भी सेवा निभा रही हैं तथा ज़िला जीरकपुर के बलटाना नगर में निवास कर रही हैं। कार्यालय 'गुरमति ज्ञान' डॉ. अमृत कौर को उपरोक्त पुरस्कार मिलने पर हार्दिक बधाई देता हुआ उनके स्वास्थ्य तथा लम्बी आयु की कामना करता है।